औपशमिक

क्षायोपशमिक

अधिकार 7
भावचूलिका अधिकार

औदयिक

क्षायिक

पारिणामिक

Presentation Developed by:
Smt. Sarika Chhabra

www.JainKosh.org

मंगलाचरण

पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं, पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥1॥
गोम्मटजिणिंदचंदं, पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं ।
गोम्मटसंगहविसयं, भावगयं चूलियं वोच्छं ॥811॥

www.JainKosh.org

गोम्मटजिणिंदचंदं, पणमिय गोम्मटपयत्थसंजुत्तं ।
गोम्मटसंगहविसयं, भावगयं चूलियं वोच्छं ॥811॥

- अर्थ—मैं नेमिचन्द्र आचार्य,
- नेमिनाथस्वामीरूप चंद्रमा को नमस्कार करके
- समीचीन पद और अर्थ से सहित अथवा
- उत्तम पदार्थों के वर्णन सहित
- ऐसे गोम्मटसार ग्रन्थ में भाव-चूलिका अधिकार को कहता हूँ ॥811॥

www.JainKosh.org

गोम्मट अर्थात् वर्धमान, नेमिनाथ जिनेन्द्रचंद्र को नमस्कार करके

गोम्मट याने समीचीन पद और अर्थों से संयुक्त

गोम्मट याने गोम्मटसार ग्रन्थ में जिसका विषय संग्रहीत है

ऐसे भावों का कथन करने वाले

भाव-चूलिका अधिकार को कहूंगा ।

जेहिं दु लक्खिज्जंते, उवसमआदीसु जाणिदभावेहिं ।
जीवा ते गुणसण्णा, णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं ॥812॥

- अर्थ—अपने प्रतिपक्षी कर्मों के उपशमादिक के होने पर
- उत्पन्न हुए जिन औपशमिकादि भावों से जीव पहचाने जावें
- वे भाव 'गुण' – ऐसी संज्ञारूप सर्वदर्शियों ने कहे हैं ॥812॥

गुण

प्रतिपक्षी कर्मों के उपशम आदि होने पर

उत्पन्न हुए जिन औपशमिक आदि भावों के द्वारा जीव पहिचाने जाते हैं,

वे भाव 'गुण' कहलाते हैं ।

www.JainKosh.org

उवसम खइओ मिस्सो, ओदइयो पारिणामियो भावो ।
भेदा दुग णव तत्तो, दुगुणिगिवीसं तियं कमसो ॥813॥

- अर्थ—वे भाव औपशमिक, क्षायिक, मिश्र, औदयिक और पारिणामिक – इस तरह पांच प्रकार के हैं ।
- उनके भेद क्रम से 2, 9, 18, 21, 3 जानने चाहिये ॥813॥

www.JainKosh.org

भावों के भेद

भाव	भेद
औपशमिक	2
क्षायिक	9
मिश्र	18
औदयिक	21
पारिणामिक	3

कम्मुवसममम्मि उवसम-भावो खीणम्मि खइयभावो दु ।
उदओ जीवस्स गुणो, खओवसमिओ हवे भावो ॥814॥

- अर्थ—प्रतिपक्षी कर्म के उपशम होने से औपशमिक भाव होता है।
- उन कर्मों के बिल्कुल क्षय होने से क्षायिक भाव होता है।
- उन प्रतिपक्षी कर्मों का उदय भी हो परंतु जीव का गुण भी प्रगट रहे, वहाँ मिश्ररूप क्षायोपशमिक भाव होता है ॥814॥

www.jainKosh.org

कर्म का

उपशम होने पर	क्षय होने पर	क्षयोपशम होने पर	उदय होने पर
औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक

भाव होते हैं ।

www.JainKosh.org

औपशमिक भाव

मोहनीय कर्म के

अंतरकरणरूप उपशम के निमित्त से

होनेवाले जीव के भावों को

औपशमिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

क्षायिक भाव

कर्म के क्षय के निमित्त से होने वाले

जीव के शुद्धभावों को

क्षायिक भाव कहते हैं ।

ये भाव भविष्य में अनंत काल पर्यंत रहते हैं।

क्षायोपशमिक भाव

कर्म के क्षयोपशम के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

क्षायोपशमिक भाव कहते हैं ।

प्रतिपक्षी कर्म का उदय भी हो और

जीव का गुण भी प्रकट हो

वह मिश्ररूप याने क्षायोपशमिक भाव होता है ।

औपशमिक, क्षायिक,
क्षायोपशमिक,
औदयिक भाव
जीवरूप हैं ।

कर्म का उपशम,
क्षय, क्षयोपशम,
उदय अजीवरूप है।

कम्मुदयजकम्मिगुणो, ओदयियो तत्थ होदि भावो दु ।
कारणणिरवेक्खभवो, सभावियो होदि परिणामो ॥815॥

- अर्थ—कर्म के उदय से उत्पन्न हुआ संसारी जीव का गुण जहाँ हो वह औदयिक भाव है।
- उपशमादि कारण के बिना जीव का जो स्वाभाविक भाव है वह पारिणामिक भाव है ॥815॥

औदयिक भाव

कर्म के उदय के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

औदयिक भाव कहते हैं ।

www.JainKosh.org

पारिणामिक भाव

पूर्णतः कर्मनिरपेक्ष अर्थात्

कर्म के उपशम, क्षय, क्षयोपशम और उदयरूप कारणों से निरपेक्ष

जीव के स्वाभाविक परिणामों को

पारिणामिक भाव कहते हैं ।

परिणाम = द्रव्य के आत्मलाभ का हेतु, कारण ।
इस परिणाम से युक्त भाव पारिणामिक भाव है ।

ये पाँचों भाव जीव के स्वतत्त्व हैं, परन्तु सभी भाव जीव के लक्षण नहीं हैं।

उवसमभावो उवसम-सम्मं चरणं च तारिसं खइओ ।
खाइयणाणं दंसण, सम्म चरित्तं च दाणादी ॥816॥

- अर्थ—औपशमिक भाव उपशम-सम्यक्त्व और उपशम-चारित्र के भेद से दो तरह का है ।
- क्षायिकभाव क्षायिकज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य – ऐसे नौ प्रकार का है ॥816॥

औपशमिक भाव

- औपशमिक सम्यक्त्व
- औपशमिक चारित्र

औपशमिक भाव में तत्संबंधी कर्म प्रकृति का बिलकुल भी उदय नहीं पाया जाता है ।

जैसे औपशमिक सम्यक्त्व में सम्यक्त्व की विरोधी प्रकृति दर्शन मोहनीय और अनन्तानुबन्धी का एक परमाणु भी उदय में नहीं आता है ।

अतः ये दोनों भाव पूर्ण निर्मल भाव हैं ।

औपशमिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 1, 2 या 3 प्रकृतियों का प्रशस्त उपशम करने पर तथा

अनन्तानुबन्धी की 4 प्रकृतियों का अप्रशस्त उपशम होने पर होने वाले

जीव के सम्यक्त्व परिणाम को औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं ।

कौन कितनी प्रकृतियों का उपशम करेगा?

अनादि मिथ्यादृष्टि

5 (अनन्तानुबन्धी 4 + 1 मिथ्यात्व)

सादि मिथ्यादृष्टि

5 (अनन्तानुबन्धी 4 + 1 मिथ्यात्व)

6 (अनन्तानुबन्धी 4 + 1 मिथ्यात्व + 1 सम्यग्मिथ्यात्व)

7 (अनन्तानुबन्धी 4 + 1 मिथ्यात्व + 1 सम्यग्मिथ्यात्व + 1 सम्यक्त्व)

JainKosh.org

अनादि मिथ्यादृष्टि

जिसने अभी तक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं किया है

सादि मिथ्यादृष्टि

जिसने पूर्व में एक बार सम्यक्त्व प्राप्त किया है और अभी मिथ्यात्व में आ गया है ।

www.JainKosh.org

दर्शन मोहनीय की 1, 2 या 3 प्रकृतियों का उपशम कैसे ?

- जिस सादि मिथ्यादृष्टि ने अभी सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति को उद्वेलना करके नष्ट नहीं किया है, वह जब औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है तब वह दर्शन मोहनीय की तीनों ही प्रकृतियों का उपशम करता है ।
- जिस सादि मिथ्यादृष्टि ने सम्यक्त्व प्रकृति की उद्वेलना कर दी है, परन्तु मिश्र की उद्वेलना करना शेष है, वह जब औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है तब वह शेष बची दर्शन मोहनीय की 2 प्रकृतियों का उपशम करता है ।
- जिस सादि मिथ्यादृष्टि ने सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति की उद्वेलना पूर्ण कर दी है, उसके पास अब मात्र मिथ्यात्व प्रकृति का सत्त्व है । ऐसा जीव जब औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है तब वह मात्र मिथ्यात्व प्रकृति का उपशम करता है ।
- अनादि मिथ्यादृष्टि के पास तो मात्र मिथ्यात्व प्रकृति का ही सत्त्व है । अतः वह जब औपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है तब वह मात्र मिथ्यात्व प्रकृति का उपशम करता है ।

उपशम किसे कहते हैं?

कर्मों का अपने परिणामों के निमित्त से आगे-पीछे करके अंतर करने को उपशम (प्रशस्त उपशम) कहते हैं।

उससे कर्म निषेकों में जो अंतर/खाली स्थान बनेगा तब उस अंतरस्थान को प्राप्त करने पर उस-उस कर्म प्रकृति का उदय नहीं रहेगा ।

www.JainKosh.org

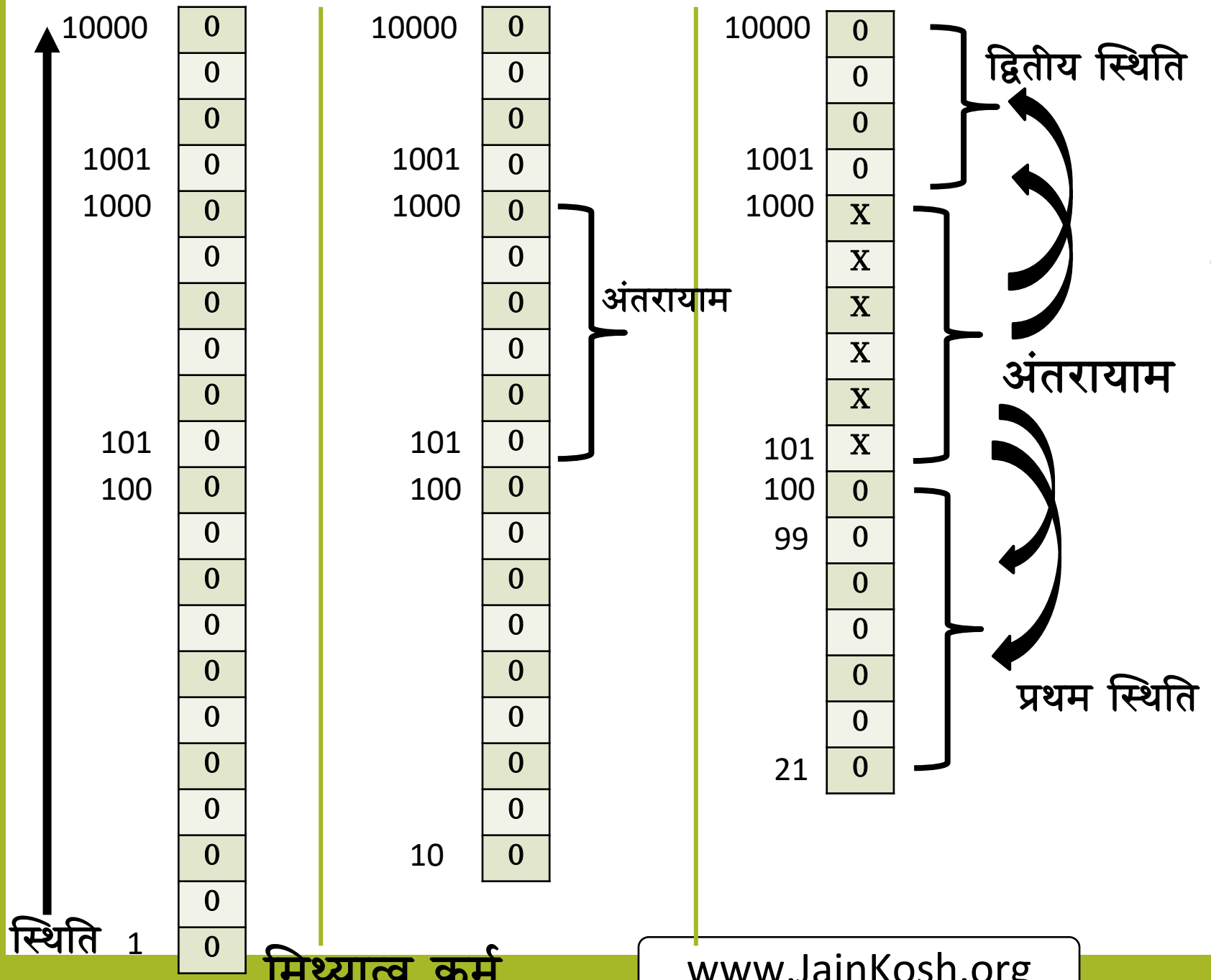

अंतरायाम का निर्माण

www.JainKosh.org

औपशमिक चारित्र

मोहनीय कर्म की समस्त प्रकृतियों के उपशम होने पर

होने वाले जीव के वीतराग चारित्ररूप परिणामों को

औपशमिक चारित्र कहते हैं ।

औपशमिक चारित्र उपशम श्रेणी में पाया जाता है ।

पूर्ण औपशमिक चारित्र उपशांत-कषाय गुणस्थान में पाया जाता है ।

www.JainKosh.org

www.JainKosh.org

उपशान्तकषाय गुणस्थान

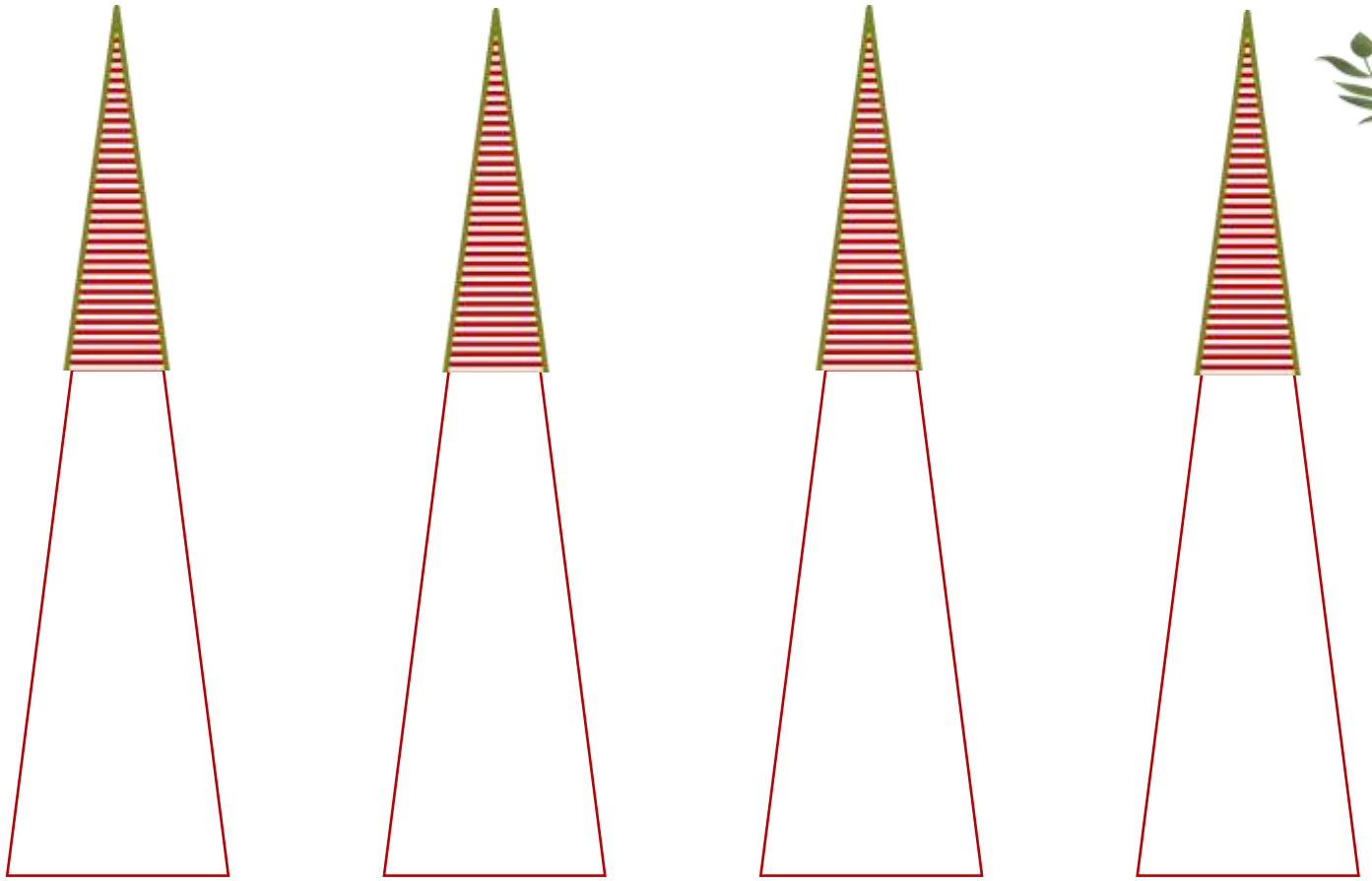

अप्रत्याख्यानावरण 4 प्रत्याख्यानावरण 4 संज्वलन 4 नोकषाय 9

उपशांतकषाय गुणस्थान

<u>कुल 21 प्रकृतियों का उपशम</u>

औपशमिक भावों के स्थान

भाव	गुणस्थान	काल
औपशमिक सम्यक्त्व	4 से 11	अंतर्मुहूर्त
औपशमिक चारित्र	8 से 11	अंतर्मुहूर्त

प्रश्न: क्या औपशमिक भाव दो ही होते हैं?

उत्तर: औपशमिक क्रोध, औपशमिक मान, औपशमिक माया, औपशमिक लोभ, उपशांत राग, उपशांत दोष आदि भी औपशमिक भाव हैं। (धवल 14, पृ. 14)

www.JainKosh.org

क्षायिक भाव (9)

क्षायिक सम्यक्त्व	क्षायिक चारित्र	क्षायिक ज्ञान
क्षायिक दर्शन	क्षायिक दान	क्षायिक लाभ
क्षायिक भोग	क्षायिक उपभोग	क्षायिक वीर्य

www.JainKosh.org

क्षायिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 3

एवं अनंतानुबंधी की 4 प्रकृतियों के नष्ट होने पर

जो अति निर्मल श्रद्धान प्रकट होता है,

वह क्षायिक सम्यक्त्व है ।

क्षायिक सम्यक्त्व

कुत्सित वचनों से

कुत्सित हेतु, दृष्टांतों से

भयकारी अनेक आकार, घटना आदि से

ग्लानि उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से

तीनों लोक मिलकर प्रयास करें तो भी

चलायमान नहीं होता ।

www.JainKosh.org

क्षायिक चारित्र

निमित्त	परिणाम	उदाहरण
सर्व मोहनीय कर्म का क्षय	अत्यंत निर्मल वीतरागी परिणाम	स्फटिक मणि के पात्र में रखा निर्मल जल

क्षायिक ज्ञान

ज्ञानावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट जो ज्ञान

एक ही साथ

सर्वतः (सर्व आत्म-प्रदेशों से)

तात्कालिक और अतात्कालिक (भूत-भविष्य),

विचित्र (अनेक प्रकार के) और विषम (मूर्त, अमूर्त आदि असमान जाति के) समस्त पदार्थों को जानता है

उस ज्ञान को क्षायिक ज्ञान कहते हैं ।

क्षायिक दर्शन

दर्शनावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट जो दर्शन

समस्त मूर्त-अमूर्त वस्तुओं के सत्ता सामान्य को

सकल प्रत्यक्षरूप से

एक समय में निर्विकल्परूप से देखता है,

उसे क्षायिक दर्शन कहते हैं ।

www.JainKosh.org

क्षायिक दान

दानान्तराय कर्म के अत्यंत क्षय होने से दिव्यध्वनि आदि द्वारा अनंत प्राणियों का उपकार करने वाला क्षायिक दान

क्षायिक लाभ

लाभान्तराय के क्षय से केवली भगवान के शरीर का बिना भोजनादि ग्रहण किये बने रहना

www.JainKosh.org

क्षायिक भोग	भोगान्तराय के अत्यंत क्षय से सुगन्धित पवन का बहना, पुष्प-वृष्टि आदि अतिशय होते हैं।
क्षायिक उपभोग	उपभोगान्तराय के अत्यंत क्षय से सिंहासन, 3 छत्र, भामंडल आदि का होना क्षायिक उपभोग है ।
क्षायिक वीर्य	वीर्यान्तराय कर्म के अत्यंत क्षय से क्षायिक वीर्य प्रगट होना

www.jainkosh.org

प्रश्न: क्या 9 ही क्षायिक भाव हैं?

उत्तर: क्षीण क्रोध, क्षीण मान, क्षीण माया, क्षीण लोभ आदि, सिद्ध, बुद्ध, सर्वदुःख-अन्तकृत – इसी प्रकार अन्य भी क्षायिक भाव जानने चाहिए ।

(धवल 14, पृ. 15)

www.JainKosh.org

खाओवसमियभावो, चउणाण तिदंसणं तिअण्णाणं ।
दाणादिपंच वेदग-सरागचारित्तदेसजमं ॥817॥

- अर्थ—क्षायोपशमिक भाव मतिज्ञानादि 4 ज्ञान, चक्षुरादि 3 दर्शन, कुमति आदि 3 अज्ञान, दानादि 5, वेदक सम्यक्त्व, सरागचारित्र और देशसंयम – इस तरह 18 भेदों सहित है ॥817॥

क्षयोपशम किसे कहते हैं?

क्षय	• वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय
उपशम	• भविष्य में उदय में आने योग्य सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम
उदय	• वर्तमानकालीन देशघाती स्पर्धकों का उदय

इन तीनरूप कर्म की अवस्था को क्षयोपशम कहते हैं ।

उदयाभावी क्षय

सर्वघाती प्रकृतियों की शक्ति अनंत गुणा हीन होकर देशघाती में परिवर्तित होकर उदय में आने को उदयाभावी क्षय कहते हैं।

इसमें सर्वघाति स्पर्धक उदय में आने के एक समय पूर्व देशघाती स्पर्धकों में परिवर्तित होते हैं ।

www.JainKosh.org

घातिया कर्मों की अनुभाग-शक्ति दो प्रकार की है-

सर्वघाती

- आत्मा के गुण का पूर्णरूप से घात करने वाला ।

देशघाती

- आत्मा के गुण का एकदेशरूप से घात करने वाला ।

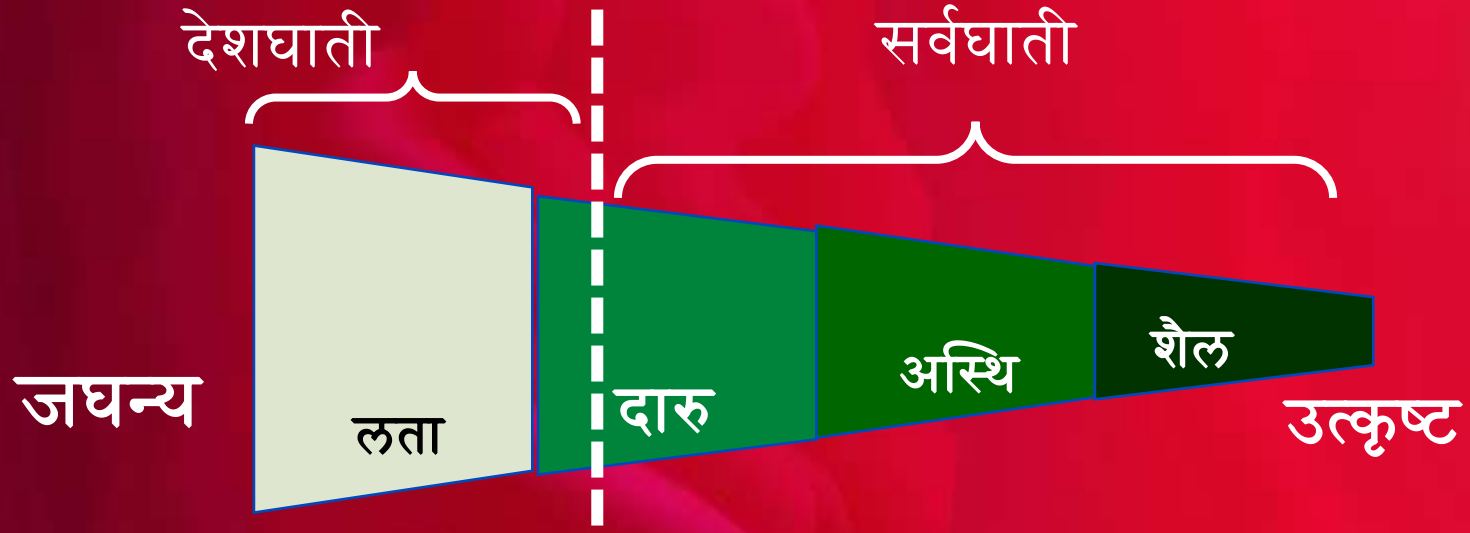

सारे लतारूप स्पर्धक देशघाती होते हैं ।

दारु के अनंतवे भाग स्पर्धक देशघाती होते हैं ।

दारु के अनंत बहुभाग स्पर्धक सर्वघाती होते हैं ।

अस्थि और शैल स्पर्धक सर्वघाती होते हैं ।

घातिया कर्मों का अनुभाग

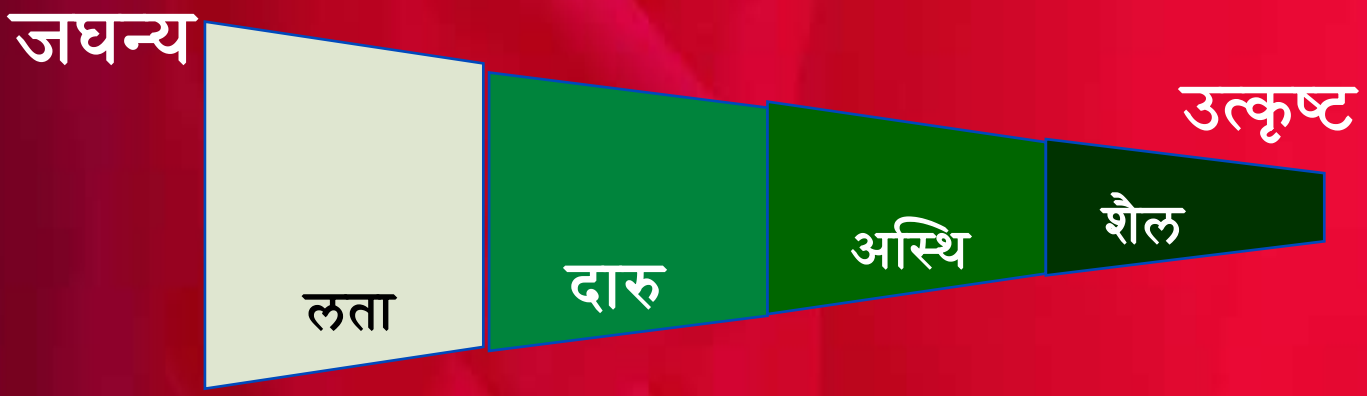

लता	दारु	अस्थि	शैल
• बेल	• काष्ठ, लकड़ी	• हड्डी	• पाषाण, पर्वत

जैसे इनमें उत्तरोत्तर अधिक-अधिक कठोरता पायी जाती है, उसी प्रकार घातिया कर्मों के अनुभाग अर्थात् फल देने की शक्ति इन-इन स्पर्धकों में अधिक-अधिक पायी जाती है।

उदयाभावी क्षय

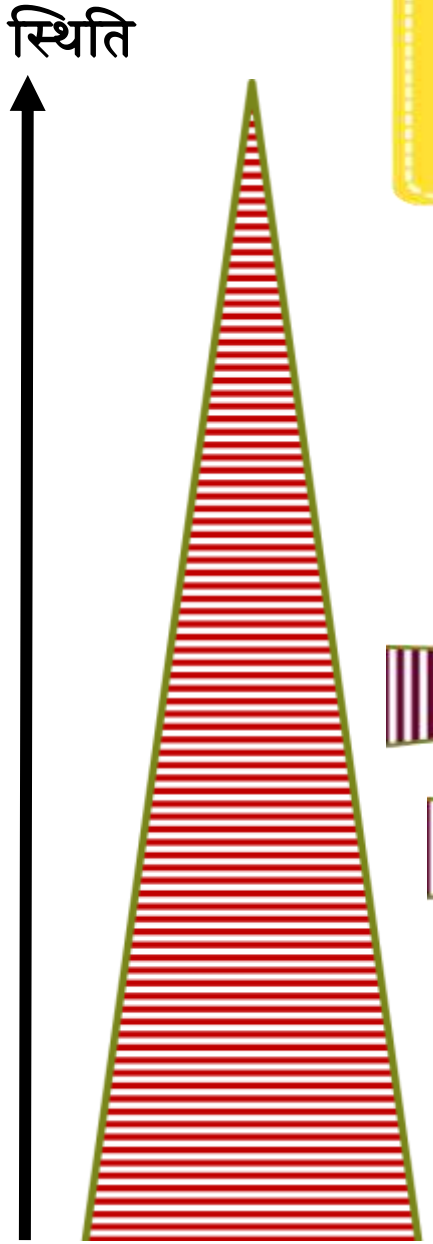

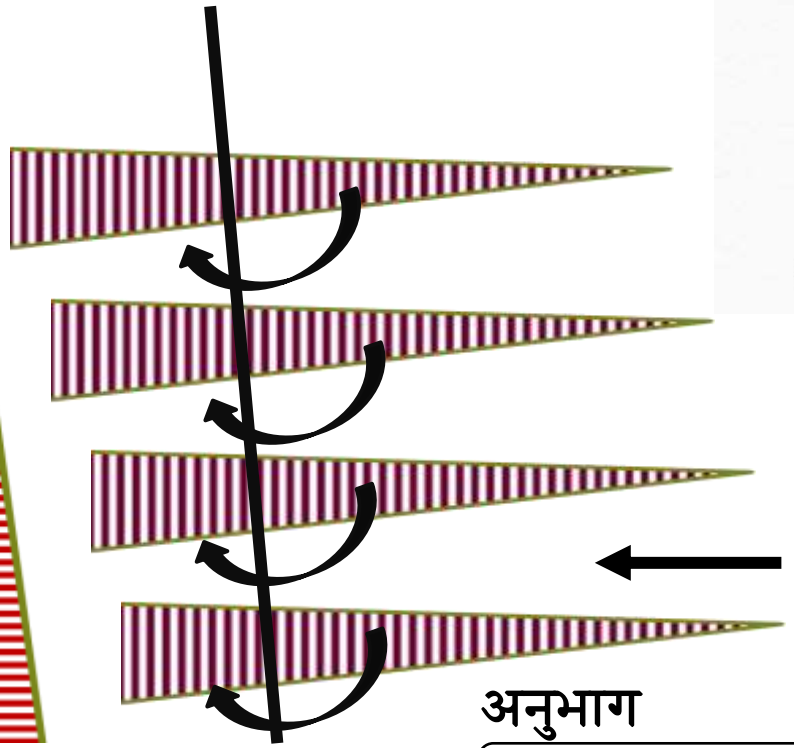

अनुभाग भेद

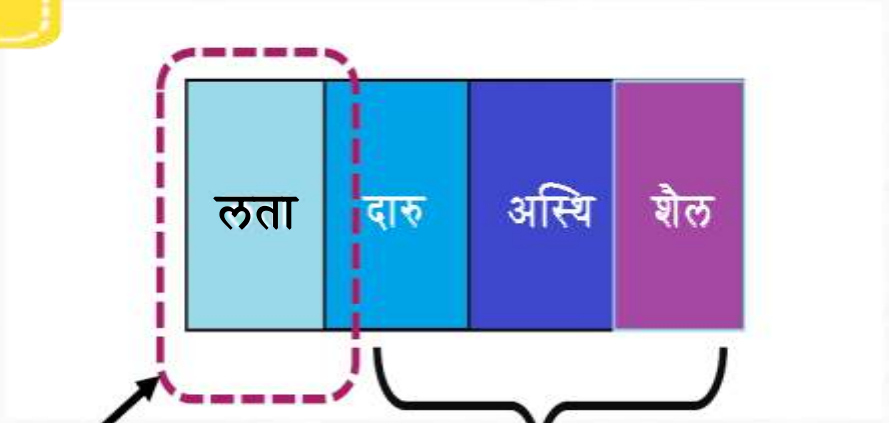

अनुभाग का अनंत गुणा हीन होना अर्थात् सर्वघाति का देशघाति रूप उदय होना

www.JainKosh.org

सदवस्थारूप उपशम

वर्तमान समय को छोड़कर

भविष्य में उदय में आने वाले सर्वघाति स्पर्धकों के

सत्ता में रहने को

सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

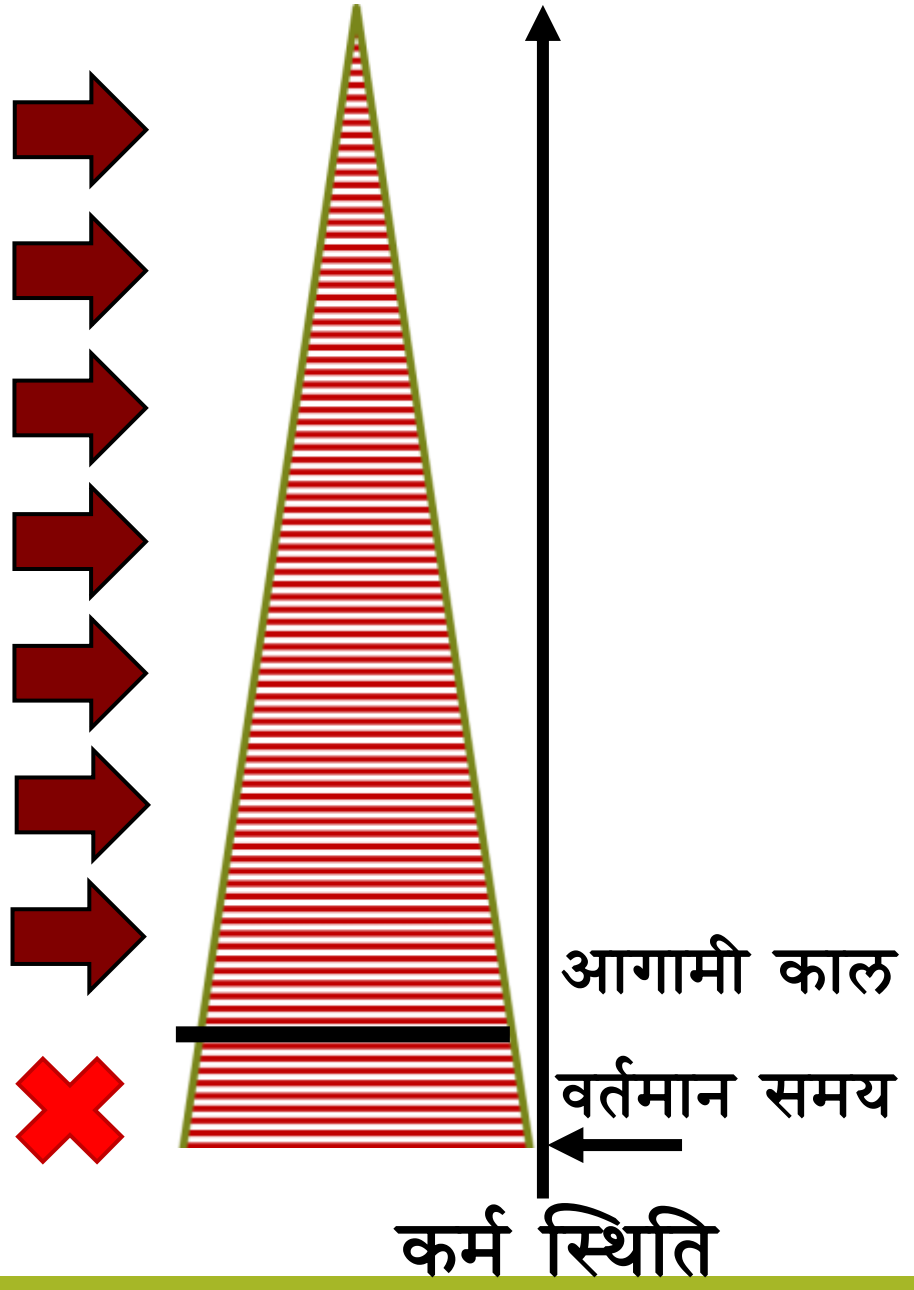

www.JainKosh.org

मतिज्ञानावरण का क्षयोपशम

ऐसा सत्त्व द्रव्य था

क्षयोपशम दशा

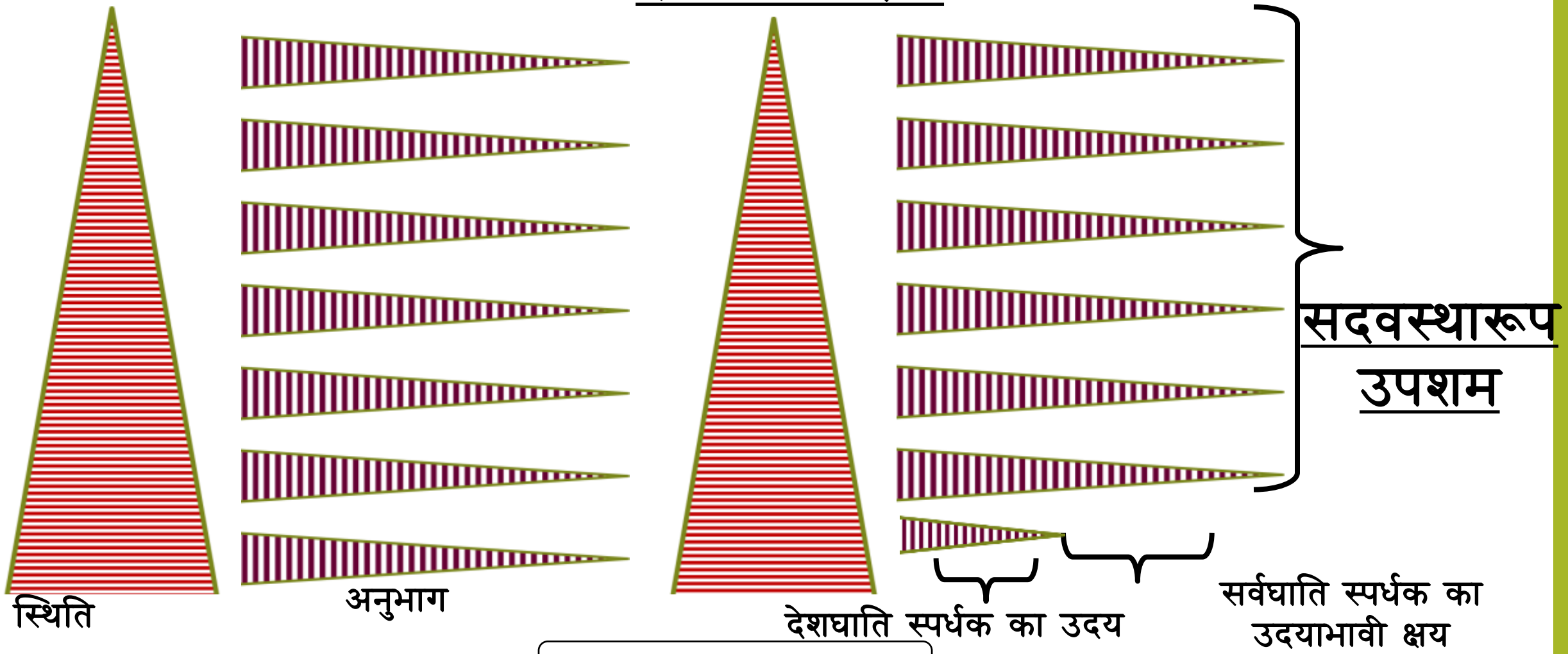

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक भाव

ज्ञान (4)

कुज्ञान (3)

दर्शन (3)

लब्धि (5)

सम्यक्त्व

चारित्र

संयमासंयम

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक ज्ञान

(ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से प्रकट ज्ञान)

मतिज्ञान	इन्द्रिय और मन की सहायता द्वारा मूर्त और अमूर्त पदार्थों को जानना
श्रुतज्ञान	मतिज्ञान के द्वारा निश्चित किए पदार्थ का अवलंबन करके उस पदार्थ से संबंधित अन्य किसी पदार्थ को जो जानता है, उसे श्रुतज्ञान कहते हैं ।
अवधिज्ञान	जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादासहित रूपी पदार्थ को प्रत्यक्ष जानता है, वह अवधिज्ञान है ।
मन:पर्यय ज्ञान	जीवों के मन में स्थित जो रूपी पदार्थ है, उनको स्पष्ट जानने वाले ज्ञान को मन:पर्ययज्ञान कहते हैं ।

इन सभी ज्ञानों में प्रतिपक्षी कर्मों का क्षयोपशम पाया जाता है ।

तो क्या सभी जीवों को अवधिज्ञान होता है क्योंकि इसका क्षयोपशम बताया गया है?

सभी जीवों को अवधिज्ञान, मन:पर्यय आदि ज्ञान नहीं पाये जाते हैं ।

जिनको अवधिज्ञान आदि होते हैं उन्हें उन कर्मों का क्षयोपशम पाया जाता है ।

जिन्हें अवधिज्ञान आदि नहीं होते हैं उन्हें उन कर्मों के सर्वघाती स्पर्धकों का उदय पाया जाता है । अतः तत्संबंधी संपूर्ण गुण (अवधि, मन:पर्यय आदि) घातित हो जाता है।

क्षायोपशमिक अज्ञान
(मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी के उदय के साथ ज्ञान)

कुमतिज्ञान	कुश्रुतज्ञान	विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान)

इनमें मतिज्ञान के समान ही क्षायोपशमिकपना जानना चाहिये ।

इन ज्ञानों में ज्ञान-अज्ञान का विभाग मिथ्यात्व कर्म के अनुदय और उदय से होता है ।

क्षायोपशमिक दर्शन
(दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से प्रकट दर्शन)

चक्षुदर्शन

अचक्षुदर्शन

अवधिदर्शन

ये तीनों दर्शन तत्संबंधी ज्ञान के पूर्व पाये जाते हैं
क्योंकि छद्मस्थ अवस्था में दर्शनपूर्वक ज्ञान पाया जाता है।

www.JainKosh.org

चक्षुदर्शन	अचक्षुदर्शन	अवधिदर्शन
चक्षु इन्द्रिय के विषय का प्रकाशन (अवभासन)	शेष 4 इन्द्रिय और मन के विषय का प्रकाशन	अवधिज्ञान के विषय का प्रकाशन
चक्षु इन्द्रिय संबंधी सामान्य ग्रहण	शेष 4 इन्द्रिय और मन संबंधी सामान्य ग्रहण	मूर्तिक द्रव्यों का प्रत्यक्ष रूप से सामान्य ग्रहण

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक लब्धि

(अंतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न जीव की शक्ति)

दान

लाभ

भोग

उपभोग

वीर्य

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी-4 का

सम्यक्त्व प्रकृति का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

उदय

तत्त्वार्थ श्रद्धान

चल-मलादि दोष

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कैसे?

दर्शन मोहनीय का अनुभाग

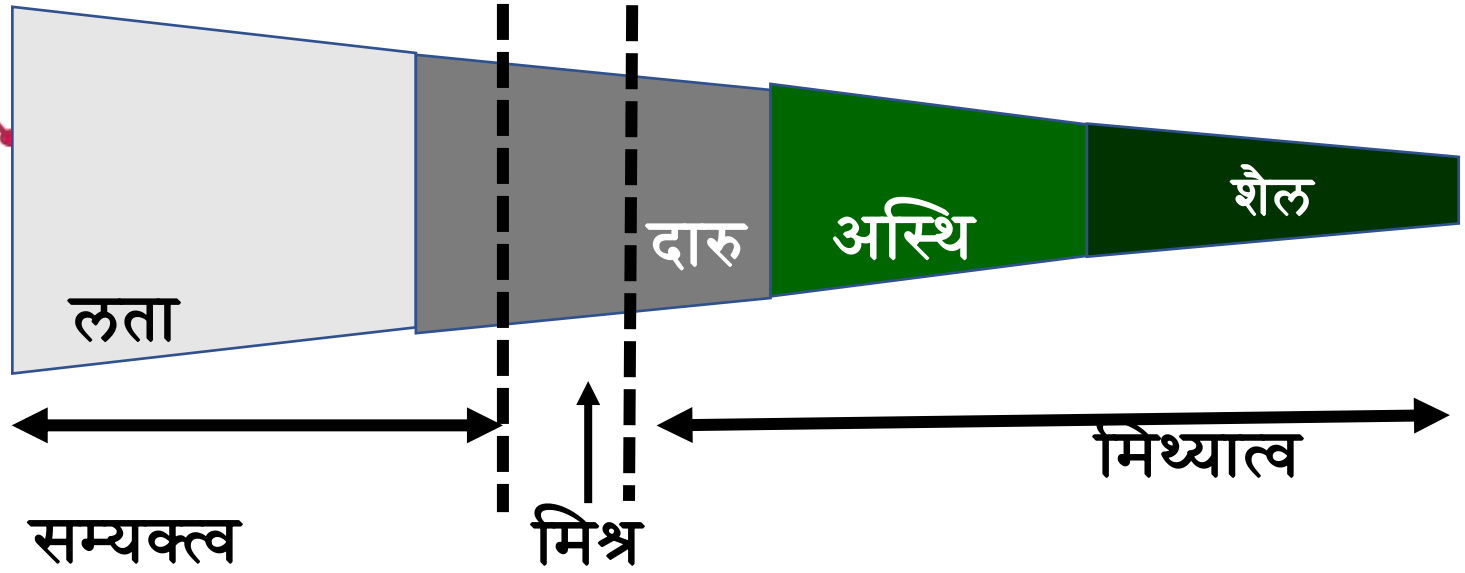

लता भाग दारु का अनंतवाँ भाग	सम्यक्त्व प्रकृति
दारु का अगला अनंतवाँ भाग	मिश्र प्रकृति
दारु का शेष अनंत अनुभाग तथा अस्थि, शैल	मिथ्यात्व प्रकृति

यह ही एक प्रकृति है, जिसमें भिन्न-भिन्न अनुभाग के कारण प्रकृतियों के नाम बदल जाते हैं ।

अन्य किसी प्रकृति में अनुभाग बदलने से प्रकृति का नाम नहीं बदला है ।

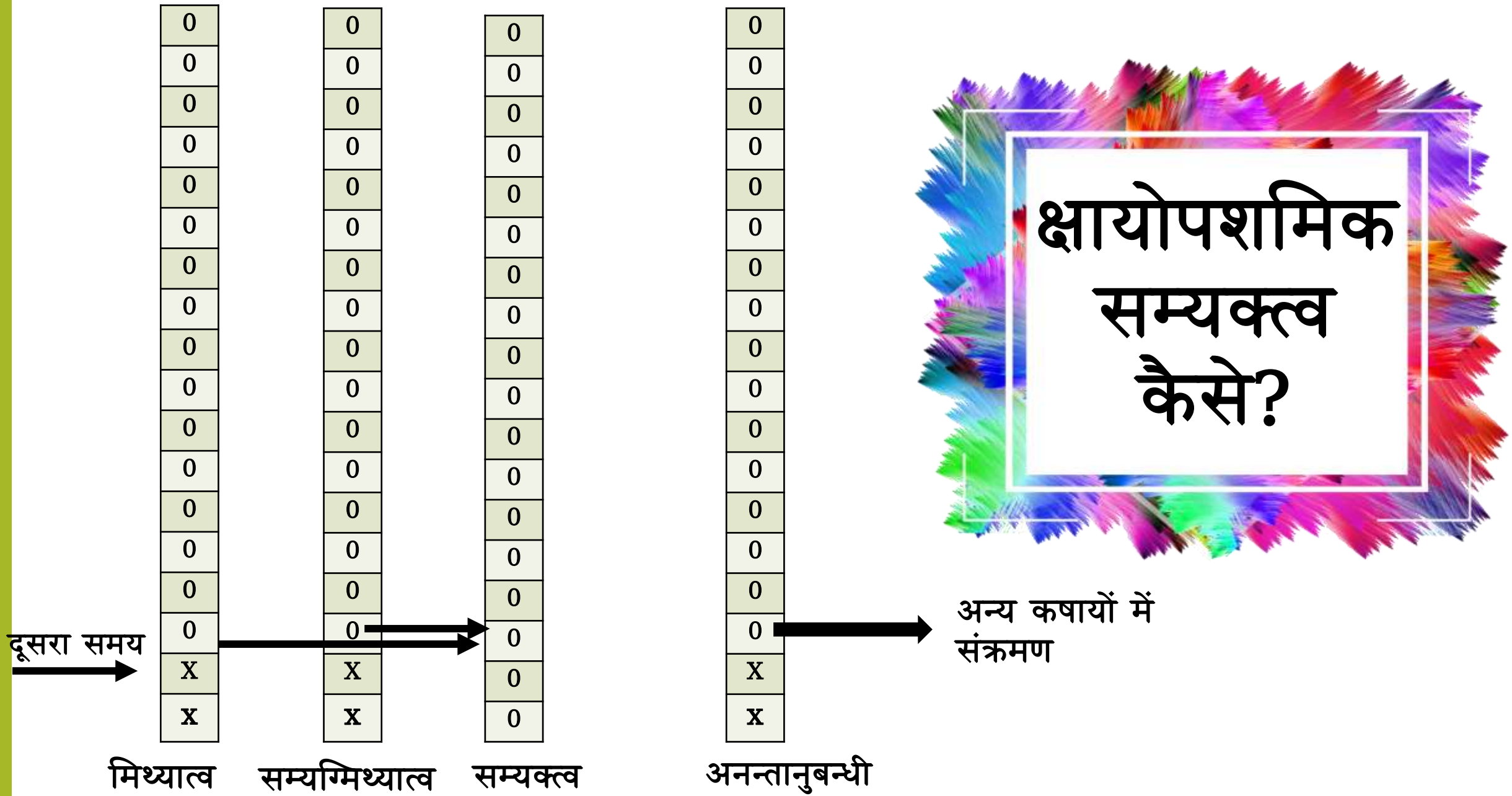

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक संयमासंयम

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

वीतरागता

प्रत्याख्यान सर्वघाती व संज्वलन, नोकषाय देशघाती स्पर्धकों का

उदय

सकल चारित्र का घात

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक चारित्र

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान सर्वघाती का

संज्वलन कषाय, नोकषाय के देशघाती स्पर्धकों का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

उदय

वीतरागता, सकल चारित्र

यथाख्यात चारित्र का घात

www.JainKosh.org

प्रश्न: क्या 18 ही क्षायोपशमिक भाव हैं?

उत्तर:क्षायोपशमिक एकेंद्रिय-लब्धि, क्षायोपशमिक द्वीन्द्रिय-लब्धि आदि लब्धियां, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायोपशमिक सूत्रकृत्-धर आदि, क्षायोपशमिक दशपूर्वधर, क्षायोपशमिक चतुर्दशपूर्वधर आदि अन्य भी क्षायोपशमिक भाव हैं ।
(धवल पु. 14 पृ. 18)

ओदयिया पुण भावा, गदिलिंगकसाय तह य मिच्छत्तं।
लेस्सासिद्धासंजम, अण्णाणं होंति इगिवीसं ॥818॥

- अर्थ—औदयिक भाव; 4 गति, 3 लिंग (वेद), 4 कषाय, एक मिथ्यात्व, 6 लेश्या, असिद्धत्व, असंयम, अज्ञान – इस रीति से 21 प्रकार का है ॥818॥

www.JainKosh.org

गति

(गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की अवस्था विशेष)

- नरक
- तिर्यंच
- मनुष्य
- देव

www.JainKosh.org

कषाय

(कषाय मोहनीय के उदय से होने वाली क्रोधादिरूप कलुषता)

क्रोध	रोष, गुस्सा
मान	रोष या विद्या, तप, जाति आदि के मद से दूसरों के तिरस्काररूप भाव
माया	वंचना (ठगना)
लोभ	आकांक्षा, इच्छा

www.JainKosh.org

लिंग (वेद)

(वेद नोकषाय के उदय से उत्पन्न अभिलाषा-विशेष)

पुरुष वेद	स्त्री के साथ रमण की अभिलाषा
स्त्री वेद	पुरुष के साथ रमण की अभिलाषा
नपुंसक वेद	युगपत् दोनों के साथ रमण की अभिलाषा

www.JainKosh.org

लेश्या

कषाय मोहनीय और शरीर नामकर्म के उदय से

कषायों से अनुरंजित

मन, वचन और काय की प्रवृत्ति

कृष्ण

नील

कपोत

पीत

पद्म

शुक्ल

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व

मिथ्यात्व नामक दर्शन मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले

जीव के अतत्त्वश्रद्धानरूप भाव को

मिथ्यात्व कहते हैं ।

www.JainKosh.org

असंयम

चारित्र मोह के उदय से होने वाले हिंसादि पापों से एवं इन्द्रिय-विषय से अनिवृत्तिरूप परिणाम

अज्ञान

ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाली ज्ञान गुण की अनभिव्यक्ति

असिद्धत्व

कर्ममात्र का उदय होने से होने वाली संसाररूप दशा

औदयिक भाव तो और भी हैं। फिर उन सबका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया?

शेष का अंतर्भाव इन 21 भावों में ही हो जाता है । जैसे

वेद में

- हास्यादि का

गति में

- वेदनीय, आयु, गोत्र का

मिथ्यादर्शन में

- दर्शनावरण का

जीवत्तं भव्वत्तमभव्वत्तादी हवंति परिणामा ।
इदि मूलुत्तरभावा, भंगवियप्पे बहु जाणे ॥819॥

- अर्थ—जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व – ये तीन पारिणामिक भाव हैं । इनमें किसी कर्म का निमित्त नहीं है, ये स्वाभाविक ही होते हैं ।
- इस तरह मूलभाव 5 और उत्तरभाव 53 हैं। यदि इनके भी भेद किये जावें तो बहुत हो सकते हैं – ऐसा जानना ॥819॥

www.JainKosh.org

पारिणामिक भाव

जीवत्व	•चैतन्य परिणाम
भव्यत्व	•मोक्ष प्रगट होने की योग्यता
अभव्यत्व	•मोक्ष प्रगट नहीं होने की योग्यता

www.JainKosh.org

5 भावों के स्वामी कौन-कौन हैं?

पारिणामिक	औदयिक	क्षायोपशमिक	क्षायिक	औपशमिक
समस्त जीव	समस्त संसारी जीव	1 से 12 गुणस्थान वर्ती जीव	सिद्ध, अरहंत, क्षायिक सम्यग्दृष्टि	औपशमिक सम्यक्त्व, चारित्र वाले जीव

ओघादेसे संभव-भावं मूलुत्तरं ठवेदूण ।
पत्तेये अविरुद्धे, परसगजोगेवि भंगा हु ॥820॥

- अर्थ—गुणस्थान और मार्गणाओं में संभवते मूलभाव और उत्तरभावों को स्थापन करके प्रमादों के अक्षसंचार के समान यहाँ पर भी प्रत्येक भंग और विरोधरहित परसंयोगी तथा स्वसंयोगी भी भंग समझने चाहिये ॥820॥

भंगों के प्रकार

प्रत्येक भंग	एक प्रकार को ही प्रत्येक भंग कहा है । जैसे औदयिक भाव
स्व-संयोगी भंग	एक भाव के एक भेद के साथ उसी भाव के दूसरे भेद के साथ संयोग को स्व-संयोगी भंग कहते हैं । जैसे मनुष्यगति के साथ क्रोध कषाय का संयोग स्व-संयोगी भंग है ।
पर-संयोगी भंग	एक भाव के भेद का अन्य भाव के साथ संयोग कहना पर-संयोगी भंग है । जैसे औपशमिक सम्यक्त्व का मनुष्य गति के साथ भंग कहना ।

www.JainKosh.org

मिच्छतिये तिचउक्के, दोसुवि सिद्धेवि मूलभावा हु ।
तिग पण पणगं चउरो, तिग दोण्णि य संभवा होंति ॥821॥

- अर्थ—मिथ्यादृष्टि आदि तीन गुणस्थानों में,
- असंयतादि चार गुणस्थानों में, उपशमश्रेणी के 4 गुणस्थानों में, क्षपकश्रेणी के चारों गुणस्थानों में – इस तरह तीन चौकड़ी में तथा
- सयोगी, अयोगी इन दोनों में और
- सिद्धजीवों में संभव होने वाले मूलभाव
- क्रम से 3, 5, 5, 4, 3, 2 जानने चाहिये ॥821॥

तत्थेव मूलभंगा, दसछव्वीसं कमेण पणतीसं ।
उगुवीसं दस पणगं, ठाणं पडि उत्तरं वोच्छं ॥822॥

- अर्थ—इन्हीं पूर्वकथित छह भेदों में क्रम से मूलभंग 10, 26, 35, 19, 10, 5 होते हैं।
- इसके बाद गुणस्थानों के प्रति उत्तरभावों को कहूँगा ॥822 ॥

www.JainKosh.org

गुणस्थानों में भाव

गुणस्थान	भाव	मूल भंग
मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र	औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक	10
असंयत से अप्रमत्तसंयत	पांचों भाव	26
उपशांतमोह, अपूर्वकरण से सूक्ष्मसांपराय उपशामक	पांचों भाव	35
क्षीणमोह, अपूर्वकरण से सूक्ष्मसांपराय क्षपक	औपशमिक बिना चार भाव	19
सयोगकेवली, अयोगकेवली	औदयिक, क्षायिक, पारिणामिक	10
सिद्ध	क्षायिक, पारिणामिक	5

गुणस्थानों में संयोगी भाव

गुणस्थान	मूलभाव	द्विसंयोगी भंग	त्रिसंयोगी भंग	चतु:संयोगी भंग	स्वसंयोगी भंग	कुल
मिथ्यात्व से मिश्र	3	3	1	0	3	10
	मिश्र, औदयिक, पारिणामिक	मिश्र-औद, मिश्र-पारि, औद-पारि	मिश्र-औद-पारि	0	मिश्र-मिश्र, औद-औद, पारि-पारि	
असंयत से अप्रमत्त	5	9	7	2	3	26
	औप, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, पारिणामिक	औप-मिश्र, औप-औद, औप-पारि, क्षायिक-मिश्र, क्षा-औद, क्षा-पारि, मिश्र-औद, मिश्र-पारि, औद-पारि	औप-मिश्र-औद, औप-मिश्र-पारि, औप-औद-पारि, क्षा-मिश्र-औद, क्षा-मिश्र-पारि, क्षा-औद-पारि, मिश्र-औद-पारि	औप-मिश्र-औद-पारि, क्षा-मिश्र-औद-पारि	उपर्युक्त 3	

उपशामक अपूर्वकरण से उपशांतमोह

मूलभाव	द्विसंयोगी भंग	त्रिसंयोगी भंग	चतु:संयोगी भंग	पंचसंयोगी भंग	स्वसंयोगी भंग	कुल
5	10	10	5	1	4	
औप, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, पारिणामिक	औप-मिश्र, औप-क्षायिक, औप-औद, औप-पारि, क्षायिक-मिश्र, क्षा-औद, क्षा-पारि, मिश्र-औद, मिश्र-पारि, औद-पारि	औप-क्षा-मिश्र, औप-क्षा-औद, औप-क्षा-पारि, औप-मिश्र-औद, औप-मिश्र-पारि, औप-औद-पारि, क्षा-मिश्र-औद, क्षा-मिश्र-पारि, क्षा-औद-पारि, मिश्र-औद-पारि	औप-क्षा-मिश्र-औद औप-क्षा-मिश्र-पारि औप-क्षा-औद-पारि औप-मिश्र-औद-पारि क्षा-मिश्र-औद-पारि	औप-क्षा-मिश्र-औद-पारि	औप-औप, मिश्र-मिश्र, औद-औद, पारि-पारि	35

गुणस्थान	मूलभाव	द्विसंयोगी भंग	त्रिसंयोगी भंग	चतु:संयोगी भंग	स्वसंयोगी भंग	कुल
क्षपक अपूर्वकरण से क्षीणमोह	4	6	4	1	4	19
	क्षायिक, मिश्र, औदयिक, पारिणामिक	क्षायिक-मिश्र, क्षा-औद, क्षा-पारि, मिश्र-औद, मिश्र-पारि, औद-पारि	क्षा-मिश्र-औद, क्षा-मिश्र-पारि, क्षा-औद-पारि, मिश्र-औद-पारि	क्षा-मिश्र-औद-पारि	क्षा-क्षा, मिश्र-मिश्र, औद-औद, पारि-पारि	
सयोगी-अयोगी	3	3	1	0	3	10
	क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक	क्षा-औद, क्षा-पारि, औद-पारि	क्षा-औद-पारि		क्षा-क्षा, औद-औद, पारि-पारि	
सिद्ध	2	1	0	0	2	5
	क्षायिक, पारिणामिक	क्षा-पारि			क्षा-क्षा, पारि-पारि	

www.jainkosh.org

गुणस्थानों में उत्तर भाव

गुणस्थान	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
मिथ्यात्व	3 अज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि = 10	सर्व 21	तीनों
सासादन	3 अज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि = 10	21 – मिथ्यात्व = 20	भव्यत्व, जीवत्व
मिश्र	3 मिश्रज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि = 11	21 – मिथ्यात्व = 20	भव्यत्व, जीवत्व

www.JainKosh.org

गुणस्थानों में उत्तर भाव

गुणस्थान	औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
4	सम्यक्त्व	सम्यक्त्व	3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व = 12	21 – मिथ्यात्व = 20	भव्यत्व, जीवत्व
5	सम्यक्त्व	सम्यक्त्व	12 + संयमासंयम = 13	मनुष्य, तिर्यंच गति, 4 कषाय, 3 लिंग, 3 शुभ लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान = 14	भव्यत्व, जीवत्व
6, 7	सम्यक्त्व	सम्यक्त्व	4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व, चारित्र = 14	मनुष्य गति, 4 कषाय, 3 लिंग, 3 शुभ लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान = 13	भव्यत्व, जीवत्व

गुणस्थानों में उत्तर भाव

गुण स्थान	औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणा मिक
8, 9	सम्यक्त्व, चारित्र	सम्यक्त्व, चारित्र	4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि = 12	मनुष्य गति, 4 कषाय, 3 लिंग, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान = 11	भव्यत्व, जीवत्व
10	सम्यक्त्व, चारित्र	सम्यक्त्व, चारित्र	4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि = 12	मनुष्य गति, लोभ कषाय, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान = 5	भव्यत्व, जीवत्व
11	सम्यक्त्व, चारित्र	सम्यक्त्व	4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि = 12	मनुष्य गति, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान	भव्यत्व, जीवत्व
12	×	सम्यक्त्व, चारित्र	4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि = 12	मनुष्य गति, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान	भव्यत्व, जीवत्व
13	×	सारे 9	×	मनुष्य गति, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व	भव्यत्व, जीवत्व
14	×	सारे 9	×	मनुष्य गति, असिद्धत्व	भव्यत्व, जीवत्व
सिद्ध	×	सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, वीर्य	×	×	जीवत्व

उत्तरभंगा दुविहा, ठाणगया पदगयात्ति पढमम्मि ।
सगजोगेण य भंगा-णयणं णत्थित्ति णिद्दिट्ठं ॥823॥

- अर्थ—उत्तर-भावों के भंग दो प्रकार हैं— स्थानगत और पदगत ।
- पहले स्थानगत भंग में स्वसंयोगी भंग नहीं पाये जाते हैं; क्योंकि एक ही समय एक स्थान में दूसरा कोई स्थान का होना संभव नहीं है – ऐसा कहा है ।

www.jainkosh.org

उत्तर भावों के दो प्रकार के भंग

स्थानगत भंग

एक जीव के एक काल में जितने भाव पाये जाते हैं, उनके समूह का नाम स्थान है । इन स्थानों की अपेक्षा जो भंग होते हैं, वे स्थानगत भंग हैं ।

पदगतभंग

एक जीव के एक काल में जो भाव पाये जाते हैं, उनकी एक जाति अथवा पृथक्-पृथक् जो नामपद हैं, उनकी अपेक्षा जो भंग होते हैं, उन्हें पदगत भंग कहते हैं ।

स्थानगत भंगों में स्वसंयोगी भंग नहीं पाये जाते हैं

मिच्छदुगे मिस्सतिये, पमत्तसत्ते य मिस्सठाणाणि ।
तिगदुग-चउरो एक्कं, ठाणं सव्वत्थ ओदयियं ॥824॥

- अर्थ—मिथ्यादृष्टि आदि दो गुणस्थानों में, मिश्रादि तीन में, और प्रमत्त आदि सात गुणस्थानों में क्रम से क्षायोपशमिक भाव के स्थान 3, 2, 4 जानने ।
- औदयिक भाव का स्थान सब गुणस्थानों में एक-एक ही है ॥824॥

www.jainkosh.org

तत्थावरणजभावा, पणछस्सत्तेव दाणपंचेव ।
अयदचउक्के वेदग-सम्मं देसम्मि देसजमं ॥825॥

- अर्थ—इन पूर्वोक्त मिथ्याद्विक आदि तीनों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण के निमित्त से उत्पन्न हुए क्षायोपशमिक भाव मिथ्यादृष्टि आदि दो गुणस्थानों में 3 अज्ञान, 2 दर्शन – ऐसे 5 हैं ।
- मिश्रादि तीन में आदि के 3 ज्ञान, 3 दर्शन इस तरह 6 हैं ।
- प्रमत्तादि सात गुणस्थानों में आदि के 4 ज्ञान, 3 दर्शन इस रीति से 7 हैं ।
- दानादिक पाँच भाव मिथ्यादृष्टि से लेकर बारहवें तक हैं ।
- वेदक सम्यक्त्व असंयतादि 4 गुणस्थानों में है ।
- देशसंयम देशसंयत गुणस्थान में ही होता है ॥825॥

www.JainKosh.org

रागजमं तु पमत्ते, इदरे मिच्छादिजेट्ठठाणाणि ।
वेभंगेण विहीणं, चक्खुविहीणं च मिच्छदुगे ॥826॥

- अर्थ—सरागचारित्र प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में है ।
- इस तरह यथासंभव भाव मिलाने से मिथ्यादृष्टि आदि क्षीणकषाय पर्यंत क्रम से क्षायोपशमिक भाव के उत्कृष्ट स्थान 10, 10, 11, 12, 13, 14, 14, 12, 12, 12, 12, 12 रूप जानने । तथा
- मिथ्यादृष्टि आदि दो गुणस्थानों में विभंग रहित 9 का स्थान, चक्षुदर्शन से भी रहित 8 का स्थान और पूर्वोक्त 10 का स्थान – इस तरह तीन-तीन स्थान हैं ॥826॥

www.JainKosh.org

अवधिदुगेण विहीणं, मिस्सतिए होदि अण्णठाणं तु ।
मणणाणेणवधिदुगे-णुभयेणूणं तदो अण्णे ॥827॥

- अर्थ—मिश्रादि तीन गुणस्थानों में एक तो अपना-अपना उत्कृष्ट स्थान, और अवधिज्ञान-अवधिदर्शन इन दोनों से रहित मिश्र में 9 का स्थान, असंयत में 10 का, देशसंयत में 11 का – इस तरह दो-दो स्थान हैं।
- प्रमत्तादि सात में एक-एक तो अपना-अपना उत्कृष्ट स्थान तथा एक-एक मनःपर्ययज्ञान रहित, एक-एक अवधिज्ञान-अवधिदर्शनरहित और एक-एक स्थान अवधिज्ञान-अवधिदर्शन-मन:पर्ययज्ञानरहित – इस प्रकार प्रमत्त-अप्रमत्त में 13, 12, 11 के तीन-तीन स्थान, अपूर्वकरणादि पाँच में 11-10-9 के तीन-तीन स्थान – ऐसे चार-चार स्थान जानने चाहिये ॥827॥

www.JainKosh.org

क्षायोपशमिक भावों के स्थान

गुणस्थान	भाव	संख्या
मिथ्यात्व, सासादन	मति-श्रुत अज्ञान, अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि	8
	मति-श्रुत अज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि	9
	3 अज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि	10
मिश्र	मति-श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि	9
	3 मिश्रज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि	11
असंयत	मति-श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व	10
	3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व	12

क्षायोपशमिक भावों के स्थान

गुणस्थान	भाव	संख्या
देशसंयत	मति-श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व, देशसंयम	11
	3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व, देशसंयम	13
प्रमत्त, अप्रमत्त	मति-श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व, सरागसंयम	11
	उपर्युक्त + मन:पर्ययज्ञान	12
	3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, सम्यक्त्व, सरागसंयम	13
	उपर्युक्त + मन:पर्ययज्ञान	14
अपूर्वकरण से क्षीणमोह	मति-श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षुदर्शन, 5 लब्धि,	9
	उपर्युक्त + मन:पर्ययज्ञान	10
	3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि	11
	उपर्युक्त + मन:पर्ययज्ञान	12

औदयिक भावों के स्थान

गुणस्थान	औदयिक भाव	संख्या
मिथ्यात्व	1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व	8
सासादन, मिश्र, असंयत	1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, अज्ञान, असंयम, असिद्धत्व	7
देशसंयम से अनिवृत्तिकरण (सवेद)	1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, अज्ञान, असिद्धत्व	6
अनिवृत्तिकरण (अवेद), सूक्ष्मसांपराय	मनुष्यगति, 1 कषाय, शुक्ल लेश्या, अज्ञान, असिद्धत्व	5
उपशांतमोह, क्षीणमोह	मनुष्यगति, शुक्ल लेश्या, अज्ञान, असिद्धत्व	4
सयोगकेवली	मनुष्यगति, शुक्ल लेश्या, असिद्धत्व	3
अयोगकेवली	मनुष्यगति, असिद्धत्व	2

लिंगकसाया लेस्सा, संगुणिदा चदुगदीसु अविरुद्धा । बारस बावत्तरियं, तत्तियमेत्तं च अडदालं ॥828॥

- अर्थ—नरकादि चार गतियों में विरोधरहित यथासंभव लिंग-कषाय-लेश्याओं का आपस में गुणाकार करने पर क्रम से 12, 72, 72, 48, भंग होते हैं ॥828॥

औदयिक भावों के भंग

प्रत्येक गति में लिंग, कषाय और लेश्या के परस्पर अविरुद्ध संभव विकल्पों को परस्पर गुणा करने से भंग प्राप्त होते हैं।

गुणस्थान	नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव
मिथ्यात्व, सासादन	नपुंसक लिंग × 4 कषाय × 3 अशुभ लेश्या = 12	3 वेद × 4 कषाय × 6 लेश्या = 72	3 वेद × 4 कषाय × 6 लेश्या = 72	स्त्री, पुरुषवेद × 4 कषाय × 6 लेश्या = 48
मिश्र, असंयत	12	72	72	स्त्री, पुरुषवेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या = 24
देशसंयत	×	3 वेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या = 36	3 वेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या = 36	×
प्रमत्त-अप्रमत्त	×	×	3 वेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या = 36	×
अपूर्वकरण से अनिवृत्तिकरण	×	×	3 वेद × 4 कषाय × शुक्ल लेश्या = 12	×

गुणस्थान		भंग
अनिवृत्तिकरण	अवेद भाग	4 कषाय × शुक्ल लेश्या = 4
	क्रोध-व्युच्छिन्न	3 कषाय × शुक्ल लेश्या = 3
	मान-व्युच्छिन्न	2 कषाय × शुक्ल लेश्या = 2
	माया-व्युच्छिन्न	लोभ कषाय × शुक्ल लेश्या = 1
सूक्ष्म सांपराय		सूक्ष्म लोभ × शुक्ल लेश्या = 1
उपशांतमोह, क्षीणमोह, सयोगकेवली		शुक्ल लेश्या
अयोगकेवली		मनुष्य गति = 1

www.JainKosh.org

णवरि विसेसं जाणे, सुरमिस्से अविरदे य सुहलेस्सा ।
चदुवीस तत्थ भंगा, असहायपरक्कमुद्दिट्ठा ॥829॥

- अर्थ—इतना विशेष जानना चाहिये कि देवगति में मिश्र और अविरत गुणस्थान में 3 शुभ लेश्या ही हैं। इस कारण वहाँ पर 24 ही भंग होते हैं – ऐसा असहाय पराक्रम वाले श्रीवर्द्धमानस्वामी ने कहा है ॥829॥

JainKosh.org

लेश्या संबंधी विशेषता

देवों में भवनत्रिक को जन्मते समय 3 अशुभ लेश्या होती हैं । इसलिए अपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा 3 अशुभ लेश्याएं कही हैं । पर्याप्त होने पर जघन्य पीत लेश्या ही होती है ।

मिश्र गुणस्थान में पर्याप्त ही होते हैं । इसलिए मिश्र गुणस्थान में 3 शुभ लेश्या ही कही हैं ।

इसी प्रकार देवों में असंयत गुणस्थान में भी शुभ लेश्या ही संभव है । अतः 3 शुभ लेश्या ही कही है ।

संयम के गुणस्थानों में शुभ लेश्या ही होती है । अतः वहाँ संभव शुभ लेश्या से ही गुणा किया है ।

चक्खूण मिच्छसासण-सम्मा तेरिच्छगा हवंति सदा । चारिकसायतिलेस्सा-णब्भासे तत्थ भंगा हु ॥830॥

- अर्थ—चक्षुदर्शन-रहित मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि हमेशा तिर्यंच ही होते हैं; इस कारण 1 नपुंसकवेद, चार कषाय और 3 लेश्याओं को आपस में गुणा करने से वहाँ पर 12 भंग नियम से जानने चाहिये ॥830॥

क्षायोपशमिक भाव का 8 भावों का जो स्थान है, उसमें कुछ विशेषता है ।

यह भंग चक्षुदर्शनरहित एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय का है ।

इनके औदयिक भाव के भंग

नपुंसकवेद × 4 कषाय × 3 अशुभ लेश्या = 12 होते हैं ।

क्योंकि इन एकेन्द्रिय आदि के नपुंसकवेद और अशुभ लेश्या ही होती है।

खाइयअविरदसम्मे, चउ सोल बिहत्तरी य बारं च ।
तद्देसो मणुसेव य, छत्तीसा तब्भवा भंगा ॥831॥

- अर्थ—क्षायिक अविरत सम्यग्दृष्टि के नारक आदि चार गतियों में क्रम से 4, 16, 72, 12 भंग होते हैं । और
- क्षायिक सम्यग्दृष्टि देशसंयत मनुष्य ही होता है, अतः वहां पर 3 वेद, 4 कषाय, 3 शुभ लेश्याओं का गुणा करने से 36 भंग होते हैं ॥831॥

www.jainkosh.org

क्षायिक सम्यग्दृष्टि के औदयिक भाव के भंग

चतुर्थ गुणस्थान

नरकगति × नपुंसकवेद × 4 कषाय × कपोत लेश्या	= 4
तिर्यंचगति × पुरुषवेद × 4 कषाय × 4 लेश्या	= 16
मनुष्यगति × 3 वेद × 4 कषाय × 6 लेश्या	= 72
देवगति × पुरुषवेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या	= 12
कुल	104

क्षायिक सम्यग्दृष्टि के औदयिक भाव के भंग
पंचम गुणस्थान

मनुष्यगति × 3 वेद × 4 कषाय × 3 शुभ लेश्या = 36

परिणामो दुट्ठाणो, मिच्छे सेसेसु एक्कठाणो दु ।
सम्मे अण्णं सम्मं, चारित्ते णत्थि चारित्तं ॥832॥

- अर्थ—पारिणामिक भाव के मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में दो स्थान हैं – जीवत्व भव्यत्व, जीवत्व अभव्यत्व । शेष द्वितीयादि गुणस्थानों में 1 ही स्थान है-जीवत्व भव्यत्व ।
- गुणस्थानों में प्रत्येक, द्विसंयोगी आदि भेद बताने के लिये विशेष बात कहते हैं कि सम्यक्त्वसहित स्थान में दूसरा सम्यक्त्व नहीं होता और चारित्रसहित स्थान में दूसरा चारित्र नहीं होता ॥832॥

www.JainKosh.org

गुणस्थान	भाव
मिथ्यात्व	जीवत्व-अभव्यत्व, जीवत्व-भव्यत्व
शेष गुणस्थान	जीवत्व-भव्यत्व
सिद्ध	जीवत्व

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व, चारित्र के नियम

1) एक सम्यक्त्व के साथ दूसरा सम्यक्त्व नहीं पाया जाता है। जैसे औपशमिक सम्यक्त्व के साथ क्षायिक या क्षायोपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

2) एक चारित्र के साथ दूसरा चारित्र नहीं पाया जाता है। जैसे औपशमिक चारित्र के साथ क्षायिक या क्षायोपशमिक चारित्र नहीं हो सकता है।

www.JainKosh.org

मिच्छदुगयदचउक्के, अट्ठट्ठाणेण खयियठाणेण ।
जुद परजोगजभंगा, पुध आणिय मेलिदव्वा हु ॥833॥

- अर्थ—मिथ्यादृष्टि आदि दो गुणस्थानों में क्षायोपशमिक के 8 के स्थान में पूर्वकथित औदयिक भंगो से सहित, तथा
- असंयतादि चार गुणस्थानों में क्षायिक सम्यक्त्व के स्थान में पूर्वकथित औदयिक भंगो से सहित
- परसंयोग से उत्पन्न हुए भंगों को जुदे-जुदे लेकर अपनी-अपनी राशि में मिलाना चाहिये ॥833॥

jainkosh.org

उदयेणक्खे चढिदे, गुणगारा एव होंति सव्वत्थ ।
अवसेसभावठाणे-णक्खे संचारिदे खेवा ॥834॥

- अर्थ—औदयिक भाव के स्थान में अक्ष के (भेदों का) संचार विधान करने से सब जगह जो भंग हों वे भंग गुणकार जानने चाहिए ।
- शेष भावों के स्थान में अक्षसंचार करने से जो भंग हों वे क्षेप जानने चाहिए ॥834॥

गुणकार भंग

जहां औदयिक भाव को भंग में ग्रहण किया जाएगा, वे भंग गुणकार भंग कहलाते हैं ।

इन गुणकार भंग को पहले कहे हुए गुण्य (multiplicand) से गुणा करने पर विवक्षित स्थान पर भंग संख्या आती है ।

www.JainKosh.org

क्षेप भंग

औदयिक भाव को छोड़कर जो अन्य भावों के प्रत्येक, द्विसंयोगी आदि भंग हैं, वे क्षेप कहलाते हैं ।

पूर्वोक्त (गुण्य × गुणकार) भंगों में इन क्षेप भंगों को जोड़ने पर विवक्षित स्थान के कुल भंग प्राप्त होते हैं ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व गुणस्थान के प्रत्येक भंग

यहां प्रत्येक भंग 5 हैं —

1) मिश्र का 10 का भावस्थान

2) मिश्र का 9 का भावस्थान

3) औदयिक का 8 का भावस्थान

4) पारिणामिक का भव्यत्व-2 वाला भावस्थान

5) पारिणामिक का अभव्यत्व-2 वाला भावस्थान

मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
10	8	भव्यत्व
9		अभव्यत्व

इनमें औदयिक भाव एक स्थान में है । अत: गुणकार भंग एक है ।

शेष 4 स्थानों में औदयिक भाव नहीं है । अत: वे चारों क्षेप भंग हैं ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व गुणस्थान के द्विसंयोगी भंग (8)

1) मिश्र-10, औदयिक-8

2) मिश्र-10, भव्यत्व-2

3) मिश्र-10, अभव्यत्व-2

4) मिश्र-9, औदयिक-8

5) मिश्र-9, भव्यत्व-2

6) मिश्र-9, अभव्यत्व-2

7) औदयिक-8, भव्यत्व-2

8) औदयिक-8, अभव्यत्व-2

- इनमें औदयिक वाले भंग 4 हैं । अतः यहां गुणकार भंग 4 हैं ।
- शेष 4 क्षेप भंग हैं ।

मिथ्यात्व गुणस्थान के त्रिसंयोगी भंग (4)

1) मिश्र-10, औदयिक-8, भव्यत्व-2

2) मिश्र-10, औदयिक-8, अभव्यत्व-2

3) मिश्र-9, औदयिक-8, भव्यत्व-2

4) मिश्र-9, औदयिक-8, अभव्यत्व-2

यहां सारे भंगों में औदयिक भाव है । अतः चारों ही भंग गुणकार भंग हैं । क्षेप भंग एक भी नहीं है ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व गुणस्थान के भंग

इस प्रकार कुल गुणकार भंग 1 + 4 + 4 = 9 हैं ।

इसे मिथ्यात्व गुणस्थान के औदयिक भावों के गुण्य 204 से गुणा करने पर औदयिक भावों के भंग आते हैं ।

9 × 204 = 1836

इसमें क्षेप भंग (4 + 4 = 8) को जोड़ने पर 1836 + 8 = 1844 भंग मिथ्यात्व गुणस्थान में होते हैं ।

औदयिक भाव के गुण्य 204 से गुणने का तात्पर्य

मिथ्यात्व गुणस्थान में औदयिक भावों के होने के 204 प्रकार हैं । उनमें से नरक गति में 12 प्रकार हैं । वे इस प्रकार हैं –

क्र.	गति	कषाय	लिंग	लेश्या	मिथ्यात्व	अज्ञान	असंयम	असिद्धत्व
1	नारकी	क्रोधी	नपुंसकवेदी	कपोतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
2	नारकी	क्रोधी	नपुंसकवेदी	नीललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
3	नारकी	क्रोधी	नपुंसकवेदी	कृष्णलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
4	नारकी	मानी	नपुंसकवेदी	कपोतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
5	नारकी	मानी	नपुंसकवेदी	नीललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
6	नारकी	मानी	नपुंसकवेदी	कृष्णलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध

इसी प्रकार मायावी के 3, लोभी के 3 प्रकार होने से औदयिक भाव वाले नारकी 12 प्रकार के हुए ।

ऐसे ही तिर्यंचगति में औदयिक भावों के 72 प्रकार हैं ।

क्र.	गति	कषाय	लिंग	लेश्या	मिथ्यात्व	अज्ञान	असंयम	असिद्ध
1	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	कृष्णलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
2	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	नीललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
3	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	कपोतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
4	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	पीतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
5	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	पद्मलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
6	तिर्यंच	क्रोधी	नपुंसकवेदी	शुक्ललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
7-12	तिर्यंच	क्रोधी	स्त्रीवेदी	कृष्ण से शुक्ललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध
13-18	तिर्यंच	क्रोधी	पुरुषवेदी	कृष्ण से शुक्ललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्ध

इस प्रकार क्रोधी तिर्यंच के 18 प्रकार (लिंग × लेश्या) से हुए ।

इसी प्रकार मानी, मायावी, लोभी तिर्यंच के प्रकार बनने से (18 × 4) = 72 प्रकार बन जाते हैं ।

इसी प्रकार मनुष्य के 72 प्रकार होते हैं ।

www.JainKosh.org

देवों में नपुंसकवेद नहीं होने से 48 प्रकार ही बनते हैं।

क्र.	गति	कषाय	लिंग	लेश्या	मिथ्यात्व	अज्ञान	असंयम	असिद्धत्व
1	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	कृष्णलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
2	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	नीललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
3	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	कपोतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
4	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	पीतलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
5	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	पद्मलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
6	देव	क्रोधी	स्त्रीवेदी	शुक्ललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
7	देव	क्रोधी	पुरुषवेदी	कृष्णलेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व
⋮	⋮	⋮	⋮	⋮	⋮	⋮	⋮	⋮
12	देव	क्रोधी	पुरुषवेदी	शुक्ललेश्यी	मिथ्यादृष्टि	अज्ञानी	असंयमी	असिद्धत्व

www.JainKosh.org

इस प्रकार 12 प्रकार बनते हैं । इसी प्रकार मानी, मायावी, लोभी देव-देवीयों के प्रकार बनने से कुल (12 × 4) = 48 प्रकार होते हैं ।

इन सबका जोड़ करने पर (12 + 72 + 72 + 48) = 204 होते हैं ।

ये ही औदयिक भाव के गुण्य 204 भंग हैं ।

www.JainKosh.org

इस तरह से जहां मिथ्यात्व गुणस्थान में 8 औदयिक भाव होते हैं, उनके होने के तरीके 204 ही हैं । तो जहां पर औदयिक भाव का ग्रहण होगा, वहां इन 204 भावों के प्रकारों कों ग्रहण करना है । इसलिए इसे गुण्य संख्या कहा है ।

जहां औदयिक भाव रहित भाव है, वहां चूंकि उन भावों के होने का एक ही प्रकार है । इसलिए उन्हें गुणकार भंग नहीं कहकर क्षेप भंग कहा है ।

जैसे भव्यत्व-जीवत्व या अभव्यत्व-जीवत्व इनके होने का एक ही प्रकार है । इसी प्रकार क्षायोपशमिक का 8 का भावस्थान या 9, 10 का भावस्थान — इनके होने का भी एक ही प्रकार है । इसलिए ये क्षेप भंग हैं ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व गुणस्थान में चक्षुदर्शन-रहित 8 का भावस्थान भी पाया जाता है ।
इसकी अपेक्षा कूट रचना ऐसी बनेगी –

मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
8	8	भव्यत्व
		अभव्यत्व

यहां प्रत्येक भंग एक है — मिश्र-8

शेष भंग पुनरुक्त हैं, इसलिए नहीं गिने हैं।

www.JainKosh.org

चक्षुदर्शन-रहित स्थान के भंग

द्विसंयोगी भंग 3 हैं

1) मिश्र-8, औदयिक-8

2) मिश्र-8, भव्यत्व-2

3) मिश्र-8, अभव्यत्व-2

इनमें एक गुणकार भंग, 2 क्षेप भंग हैं ।

त्रिसंयोगी भंग 2 हैं

1) मिश्र-8, औदयिक-8, भव्यत्व-2

2) मिश्र-8, औदयिक-8, अभव्यत्व-2

ये दोनों ही गुणकार भंग हैं ।

v.JainKosh.org

चक्षुदर्शन-रहित स्थान के भंग

अतः कुल गुणकार भंग 1 + 2 = 3 हैं ।

चक्षुदर्शनरहित जीव के औदयिक भाव नपुंसक वेद के साथ ही होते हैं। अतः इनके भंग (1 नपुंसक वेद × 3 अशुभ लेश्या × 4 कषाय) = 12 बनते हैं ।

उपर्युक्त 3 गुणकार भंग को गुण्य 12 से गुणा करने पर 12 × 3 = 36 भंग हैं ।

इनमें क्षेप भंग 1 + 2 = 3 मिलाने पर कुल 39 भंग होते हैं ।

मिथ्यात्व गुणस्थान के कुल भंग

	चक्षुदर्शन-सहित भंग	चक्षुदर्शन-रहित भंग
गुण्य × गुणकार भंग	204 × 9 = 1836	12 × 3 = 36
क्षेप भंग	8	+ 3
कुल	1844	39
दोनों का जोड़	1883	

www.JainKosh.org

भंगों का भावार्थ

जीवों में पाये जाने वाले भावों के आधार से जीवों को कभी एक भाव से, कभी दो भावों से देखा जा सकता है। जैसे किसी जीव को इन प्रकारों से देखा-

यह बहुत बुद्धिमान है।	यह मनुष्य है।	यह भव्य है।
यह बहुत दानी है।	यह स्त्री है।	यह अभव्य है।
यह विभंगज्ञानी है।	यह मिथ्यादृष्टि है।	यह जीव है।
ये मिश्र भाव से परिणत जीव को देखा जा रहा है।	ये औदयिक भाव से परिणत जीव को देखा जा रहा है।	ये पारिणामिक भाव से परिणत जीव को देखा जा रहा है।

इसी प्रकार द्विसंयोग भाव से देखा जाता है। यथा -

यह मनुष्य बहुत ज्ञानी है ।	मिश्र, औदयिक
यह देव बहुत शक्तिशाली है ।	मिश्र, औदयिक
यह नारकी जीव है ।	औदयिक, पारिणामिक
यह मिथ्यादृष्टि भी भव्य है ।	औदयिक, पारिणामिक
यह भव्य चक्षुदर्शन शक्ति वाला है ।	मिश्र, पारिणामिक
अभव्य भी विभंगज्ञानी होता है ।	मिश्र, पारिणामिक

इसी प्रकार त्रिसंयोगी भाव से देखा जाता है । यथा

यह भव्य मनुष्य सम्यग्ज्ञानी है।

यह अभव्य तिर्यंच चक्षुर्दर्शनी है।

यह भव्य मिथ्यादृष्टि दानी है।

इस प्रकार से इन भंगों द्वारा जीवों के प्ररूपण का उपाय प्राप्त होता है ।

यहां एक संयोगी भंग से यह अर्थ नहीं है कि कोई मिथ्यादृष्टि जीव मात्र एक प्रकार के भावों से परिणत रहता है, शेष भाव उसके नहीं हैं ।

मिथ्यादृष्टि के औदयिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक भाव नियम से पाये जाते हैं ।

बस, उनके देखने के दृष्टिकोण इन भंगों द्वारा बताये हैं ।

यह पूर्वोक्त कहे उदाहरण एक-एक भाव को ग्रहण करके कहे हैं । एक ही भाव के सारे प्रकारों से परिणत जीव को यहां पर देखना है। जैसे मिश्र के 3 भावस्थानों से परिणत भाव इस प्रकार होगा

8	कुमति-श्रुतज्ञानी, अचक्षुदर्शनी, दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य लब्धिवान
9	कुमति-श्रुत, चक्षु-अचक्षुदर्शनी, दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य लब्धिवान
10	कुमति-श्रुतज्ञानी-विभंगज्ञानी, चक्षु-अचक्षुदर्शनी, दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य लब्धिवान

इसी प्रकार पारिणामिक भाव के भाव इस प्रकार बनेंगे

1) भव्य जीव

2) अभव्य जीव

जब हम द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी भावों से देखेंगे, तो इस पूरे भाव से परिणत जीव को ग्रहण करना है ।

www.JainKosh.org

सासादन के भंग

मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
9	7	2-भव्य
10		

प्रत्येक भंग 4 हैं ।

इनमें औदयिक का एक भाव होने से गुणकार भंग एक तथा शेष तीन क्षेप भंग हैं ।

द्विसंयोगी भंग 5 हैं –

1) मिश्र-9, औदयिक-7

2) मिश्र-9, भव्य-2

3) मिश्र-10, औदयिक-7

4) मिश्र-10, भव्य-2

5) औदयिक-7, भव्य-2

इनमें गुणकार भंग 3 हैं, 2 क्षेप भंग हैं ।

www.JainK

त्रिसंयोगी भंग 2 हैं -

मिश्र-9, औदयिक-7, भव्य-2

मिश्र-10, औदयिक-7, भव्य-2

ये दोनों ही गुणकार भंग हैं ।

कुल गुणकार भंग 1+3+2 = 6 हैं ।

इन्हें गुण्य 204 से गुणा करने पर
204 × 6 = 1224 भंग हुए ।

क्षेप भंग 3+2 = 5 मिलाने पर
1229 भंग होते हैं ।

चक्षुदर्शनरहित सासादन के भंग

मिश्र-8

औदयिक-7

भव्य-2

प्रत्येक संयोगी भंग एक है — मिश्र-8 का ।

द्विसंयोगी भंग मिश्र-8, औदयिक-7 तथा मिश्र-8, भव्य-2 का है । इनमें एक गुणकार भंग व एक क्षेप भंग है ।

त्रिसंयोगी भंग मिश्र-8, औदयिक-7, भव्य-2 वाला एक ही है । यह गुणकार भंग है ।

इस प्रकार कुल 2 गुणकार भंग हैं । इन्हें गुण्य 12 से गुणा करने पर 24 भंग हुए ।

क्षेप भंग 1+1 = 2 मिलाने पर 26 भंग चक्षुदर्शनरहित भाव में हुए ।

इन्हें सासादन के पूर्व भंगों में जोड़ने पर 1229+26 = 1255 भंग सासादन में होते हैं ।

www.JainKosh.org

मिश्र गुणस्थान के भंग

मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
9	7	2
11		

प्रत्येक भंग

मिश्र-9

मिश्र-11

औदयिक-7

भव्य-2

गुणकार भंग = 1

क्षेप भंग = 3

www.JainKosh.org

द्विसंयोगी भंग

मिश्र-9, औदयिक-7

मिश्र-9, भव्य-2

मिश्र-11, औदयिक-7

मिश्र-11, भव्य-2

औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 3

क्षेप भंग = 2

त्रिसंयोगी भंग

मिश्र-9, औदयिक-7, भव्य-2

मिश्र-11, औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 2

क्षेप भंग = 0

गुणकार 6 × गुण्य 180 = 1080 + क्षेप भंग 5 = 1085 भंग

असंयत गुणस्थान के भंग

औपशमिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
1	10	7	भव्य-2
	12		

प्रत्येक भंग

औपशमिक-1	मिश्र-10	मिश्र-12
औदयिक-7	भव्य-2	

गुणकार भंग = 1

क्षेप भंग = 4

www.JainKosh.org

द्विसंयोगी भंग

- औपशमिक-1, मिश्र-10
- औपशमिक-1, मिश्र-12
- औपशमिक-1, औदयिक-7
- औपशमिक-1, भव्य-2
- मिश्र-10, औदयिक-7
- मिश्र-10, भव्य-2
- मिश्र-12, औदयिक-7
- मिश्र-12, भव्य-2
- औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 4

क्षेप भंग =5

www.JainKosh.org

त्रिसंयोगी भंग

औपशमिक-1, मिश्र-10, औदयिक-7

औपशमिक-1, मिश्र-10, भव्य-2

औपशमिक-1, मिश्र-12, औदयिक-7

औपशमिक-1, मिश्र-12, भव्य-2

औपशमिक-1, औदयिक-7, भव्य-2

मिश्र-10, औदयिक-7, भव्य-2

मिश्र-12, औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 5

क्षेप भंग = 2

चतु:संयोगी भंग

औपशमिक-1, मिश्र-10, औदयिक-7, भव्य-2

औपशमिक-1, मिश्र-12, औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग =2

क्षेप भंग = 0

www.JainKosh.org

असंयत गुणस्थान के भंग

गुणकार भंग 12 × गुण्य 180 = 2160 + क्षेप 11 = 2171

जहां औपशमिक सम्यक्त्व या क्षायिक सम्यक्त्व के साथ का भंग है, वहां मिश्र का 10 वाला स्थान न होकर 9 वाला स्थान होगा तथा जहां 12 का स्थान है, वहां 11 का स्थान होगा। क्योंकि एक सम्यक्त्व के साथ अन्य प्रकार का सम्यक्त्व संभव नहीं है।

क्षायिक सम्यक्त्व के साथ सारे औदयिक भाव नहीं बनते हैं (गाथा 831)। इसलिए इनके भंगों को अलग से कह रहे हैं।

क्षायिक सम्यक्त्व के साथ असंयत के भंग

क्षायिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
1	10 12	7	भव्य-2

प्रत्येक भंग

क्षायिक – 1

गुणकार 0

क्षेप 1

www.JainKosh.org

द्विसंयोगी भंग

क्षायिक-1, मिश्र-9

क्षायिक-1, मिश्र-11

क्षायिक-1, औदयिक-7

क्षायिक-1, भव्य-2

गुणकार भंग = 1

क्षेप भंग = 3

त्रिसंयोगी भंग

क्षायिक-1, मिश्र-9, औदयिक-7

क्षायिक-1, मिश्र-11, औदयिक-7

क्षायिक-1, मिश्र-9, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-11, भव्य-2

क्षायिक-1, औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 3

क्षेप भंग = 2

www.JainKos

चतुःसंयोगी भंग

क्षायिक-1, मिश्र-9, औदयिक-7, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-11, औदयिक-7, भव्य-2

गुणकार भंग = 2

क्षेप भंग = 0

शेष भंग पुनरुक्त हैं । इसलिए पुनः नहीं गिने हैं ।

गुणकार 6 × गुण्य 104 = 624 + क्षेप 6 = 630 भंग हुए ।

कुल भंग = पूर्वोक्त 2171 + 630 = 2801

www.JainKosh.org

यहां स्वतंत्ररूप से क्षायोपशमिक का 9, 11 भाव वाला स्थान नहीं लिया है । मात्र औपशमिक और क्षायिक सम्यक्त्व के साथ ही 9 और 11 वाला स्थान लेना है ।

स्वतंत्ररूप से 9, 11 का स्थान ग्रहण करने पर सम्यक्त्व गुण नहीं आ पाता है । इसलिए इतने ही भंग संभव हैं ।

प्रश्न: फिर भी 9 और 11 का स्वतंत्र भंग तो दे ही सकते थे ?

उत्तर: स्वतंत्र रूप से 9 और 11 का स्थान देने पर संदेह होता है कि सम्यक्त्व गुण कौन-सा है? है भी या नहीं । इसलिए उस भंग को नहीं कहा ।

देशसंयत गुणस्थान के भंग

औपशमिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
1	11 13	6	भव्य-2

देशसंयत के प्रत्येक संयोगी आदि भंग असंयत के समान बनेंगे ।

परंतु क्षायोपशमिक में देशसंयम भाव और जुड़ जाने से 11 और 13 के भावस्थान होते हैं । तथा औदयिक में असंयम भंग घट जाने से 6 भाव होते हैं, 7 नहीं ।

गुणकार भंग 12 × गुण्य 72 = 864 + क्षेप भंग 11 = 875

क्षायिक सम्यक्त्व के साथ देशसंयत के भंग

क्षायिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
1	11 13	6	भव्य-2

यहां के भंग भी क्षायिक असयंत सम्यक्त्व के समान है । विशेषता पूर्व के समान मिश्र और औदयिक भावों में है ।

Homework – क्षायिक सम्यग्दृष्टि देशसंयत के भंग बनाकर लाइए ।

गुणकार 6 × गुण्य 36 = 216 + क्षेप 6 = 222 भंग होते हैं ।

कुल भंग = 875 + 222 = 1097

प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थान के भंग

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
1	1	11 12 13 14	6	भव्य-2

www.JainKosh.org

प्रत्येक भंग

औपशमिक-1

क्षायिक-1

मिश्र-11

मिश्र-12

मिश्र-13

मिश्र-14

औदयिक-6

पारिणामिक-2

गुणकार 1

क्षेप 7

www.Jain

द्विसंयोगी भंग

औपशमिक-1, मिश्र-11

औपशमिक-1, मिश्र-12

औपशमिक-1, मिश्र-13

औपशमिक-1, मिश्र-14

औपशमिक-1, औ-6

औपशमिक-1, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-11

क्षायिक-1, मिश्र-12

क्षायिक-1, मिश्र-13

क्षायिक-1, मिश्र-14

गुणकार = 7

क्षायिक-1, औ-6

क्षायिक-1, भव्य-2

मिश्र-11, औ-6

मिश्र-12, औ-6

मिश्र-13, औ-6

मिश्र-14, औ-6

मिश्र-11, भव्य-2

मिश्र-12, भव्य-2

मिश्र-13, भव्य-2

मिश्र-14, भव्य-2

औ-6, भव्य-2

क्षेप = 14

www.JainKosh.org

औपशमिक-1, मिश्र-11, औ-6

औपशमिक-1, मिश्र-11, भव्य-2

औपशमिक-1, मिश्र-12, औ-6

औपशमिक-1, मिश्र-12, भव्य-2

औपशमिक-1, मिश्र-13, औ-6

औपशमिक-1, मिश्र-13, भव्य-2

औपशमिक-1, मिश्र-14, औ-6

औपशमिक-1, मिश्र-14, भव्य-2

औपशमिक-1, औ-6, भव्य-2

ऐसे ही 9 भंग क्षायिक के लिखना

त्रिसंयोगी भंग

मिश्र-11, औ-6, भव्य-2

मिश्र-12, औ-6, भव्य-2

मिश्र-13, औ-6, भव्य-2

मिश्र-14, औ-6, भव्य-2

गुणकार = 14

क्षेप = 8

osh.org

चतुःसंयोगी भंग

गुणकार 30 × गुण्य 36 = 1080 + क्षेप 29 = 1109 भंग होते हैं ।

यहां क्षायिक सम्यक्त्व के भंग अलग से नहीं निकाले क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व संबंधी औदयिक भाव के उतने ही भंग हैं जितने औपशमिक सम्यक्त्व या क्षायोपशमिक सम्यक्त्व के साथ ।

इतने ही 1109 भंग अप्रमत्त गुणस्थान में भी होते हैं ।

औपशमिक-1, मिश्र-11, औ-6, भ-2

औपशमिक-1, मिश्र-12, औ-6, भ-2

औपशमिक-1, मिश्र-13, औ-6, भ-2

औपशमिक-1, मिश्र-14, औ-6, भ-2

क्षायिक-1, मिश्र-11, औ-6, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-12, औ-6, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-13, औ-6, भव्य-2

क्षायिक-1, मिश्र-14, औ-6, भव्य-2

गुणकार = 8

क्षेप = 0

क्षपक अपूर्वकरण के भंग

क्षायिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
2	9 10 11 12	6	भव्य-2

www.JainKosh.org

प्रत्येक भंग

क्षायिक-2

मिश्र-9

मिश्र-10

मिश्र-11

मिश्र-12

औ-6

भव्य-2

गुणकार = 1

क्षेप = 6

www.JainKosh.org

द्विसंयोगी भंग

क्षायिक-2, मिश्र-9	मिश्र-10, औ-6
क्षायिक-2, मिश्र-10	मिश्र-10, भव्य-2
क्षायिक-2, मिश्र-11	मिश्र-11, औ-6
क्षायिक-2, मिश्र-12	मिश्र-11, भव्य-2
क्षायिक-2, औ-6	मिश्र-12, औ-6
क्षायिक-2, भव्य-2	मिश्र-12, भव्य-2
मिश्र-9, औ-6	औ-6, भव्य-2
मिश्र-9, भव्य-2	

गुणकार = 6

क्षेप = 9

inKosh

त्रिसंयोगी भंग

क्षायिक-2, मिश्र-9, औ-6

क्षायिक-2, मिश्र-9, भव्य-2

क्षायिक-2, मिश्र-10, औ-6

क्षायिक-2, मिश्र-10, भ-2

क्षायिक-2, मिश्र-11, औ-6

क्षायिक-2, मिश्र-11, भ-2

क्षायिक-2, मिश्र-12, औ-6

क्षायिक-2, मिश्र-12, भव्य-2

क्षायिक-2, औ-6, भव्य-2

मिश्र-9, औ-6, भव्य-2

मिश्र-10, औ-6, भव्य-2

मिश्र-11, औ-6, भव्य-2

मिश्र-12, औ-6, भव्य-2

गुणकार = 9

क्षेप = 4

www.JainKosh.org

चतु:संयोगी भंग

गुणकार 20 × गुण्य 12
= 240 + 19 क्षेप
= 259 भंग होते हैं ।

क्षायिक-2, मिश्र-9, औ-6, भव्य-2

क्षायिक-2, मिश्र-10, औ-6, भ-2

क्षायिक-2, मिश्र-11, औ-6, भ-2

क्षायिक-2, मिश्र-12, औ-6, भ-2

गुणकार 4

क्षेप 0

www.JainKosh.org

क्षपक अनिवृत्तिकरण के भंग

सवेद भाग में क्षपक अपूर्वकरणवत् 259 भंग होते हैं ।

भाग	गुणकार	गुण्य	क्षेप	कुल भंग
वेदरहित भाग	20	× 4	+ 19	99
क्रोधरहित भाग	20	× 3	+ 19	79
मानरहित भाग	20	× 2	+ 19	59
मायारहित भाग	20	× 1	+ 19	39

यहां वेदरहित भाग से औदयिक में 6 भाव के स्थान पर 5 भाव ही ग्रहण करना । क्योंकि वेद औदयिक भाव का अभाव हो गया है ।

सूक्ष्म-सांपराय क्षपक के अनिवृत्तिकरणवत् 39 भंग हैं ।

क्षीणकषाय में भी ऐसे ही 39 भंग हैं । परन्तु औदयिक भाव के यहां 5 के स्थान पर 4 भाव ही होते हैं । क्योंकि कषाय औदयिक भाव का अभाव हो गया है ।

सयोगकेवली-अयोगकेवली के भंग

क्षायिक	औदयिक	पारिणामिक
9	3	भव्य

प्रत्येक	द्विसंयोगी	त्रिसंयोगी
क्षायिक-9 औ-3 भव्य-2	क्षायिक-9, औ-3, क्षायिक-9, भव्य-2 औ-3, भव्य-2	क्षायिक-9, औ-3, भव्य-2

गुणकार भंग 4 × 1 = 4 + 3 क्षेप = 7 भंग सयोगकेवली के पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार अयोगकेवली के भी 7 भंग हैं । परंतु औदयिक भावों में 3 के स्थान पर 2 का भाव है ।

सिद्ध भगवान् के भंग

क्षायिक	पारिणामिक
1	जीवत्व

प्रत्येक भंग	द्विसंयोगी
क्षायिक जीवत्व	क्षायिक, जीवत्व

ऐसे तीन ही भंग पाये जाते हैं ।

अपूर्वकरण उपशामक के भंग

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र	औदयिक	पारिणामिक
2	1	9 10 11 12	6	भव्य-2

www.JainKosh.org

प्रत्येक भंग

औप-2
क्षा-1
मिश्र-9
मिश्र-10
मिश्र-11
मिश्र-12
औ-6
भव्य-2
गुणकार = 1
क्षेप = 7

www.Ja

द्विसंयोगी भंग

औप-2, क्षा-1

औप-2, मिश्र-9

औप-2, मिश्र-10

औप-2, मिश्र-11

औप-2, मिश्र-12

औप-2, औ-6

औप-2, भ-2

क्षायिक-1, मिश्र-9

क्षायिक-1, मिश्र-10

क्षायिक-1, मिश्र-11

क्षायिक-1, मिश्र-12

क्षा-1, औ-6

क्षा-1, भव्य-2

मिश्र-9, औ-6

मिश्र-9, भव्य-2

मिश्र-10, औ-6

मिश्र-10, भव्य-2

मिश्र-11, औ-6

मिश्र-11, भव्य-2

मिश्र-12, औ-6

मिश्र-12, भ-2

औ-6, भ-2

गुणकार = 7

क्षेप = 15

www.JainKosh.org

त्रिसंयोगी भंग

औप-2 क्षायिक-1, मिश्र-9	क्षा-1, मिश्र-9, औ-6
औप-2, क्षायिक-1, मिश्र-10	क्षा-1, मिश्र-9, भव्य-2
औप-2, क्षायिक-1, मिश्र-11	क्षा-1, मिश्र-10, औ-6
औप-2, क्षायिक-1, मिश्र-12	क्षा-1, मिश्र-10, भव्य-2
औप-2, क्षायिक-1, औ-6	क्षा-1, मिश्र-11, औ-6
औप-2, क्षायिक-1, भव्य-2	क्षा-1, मिश्र-11, भव्य-2
औप-2, मिश्र-9, औ-6	क्षा-1, मिश्र-12, औ-6
औप-2, मिश्र-9, भव्य-2	क्षा-1, मिश्र-12, भव्य-2
औप-2, मिश्र-10, औ-6	क्षा-1, औ-6, भ-2
औप-2, मिश्र-10, भव्य-2	मिश्र-9, औ-6, भ-2
औप-2, मिश्र-11, औ-6	मिश्र-10, औ-6, भ-2
औप-2, मिश्र-11, भव्य-2	मिश्र-11, औ-6, भ-2
औप-2, मिश्र-12, औ-6	मिश्र-12, औ-6, भ-2
औप-2, मिश्र-12, भव्य-2	गुणकार = 15
औप-2, औ-6, भ-2	क्षेप = 13

www.JainKosh.org

चतुः संयोगी भंग

औ-2, क्षा-1, मिश्र-9, औ-6

औ-2, क्षा-1, मिश्र-9, भव्य-2

औ-2, क्षा-1, मिश्र-10, औ-6

औ-2, क्षा-1, मिश्र-10, भव्य-2

औ-2, क्षा-1, मिश्र-11, औ-6

औ-2, क्षा-1, मिश्र-11, भव्य-2

औ-2, क्षा-1, मिश्र-12, औ-6

औ-2, क्षा-1, मिश्र-12, भव्य-2

औ-2, क्षायिक-1, औ-6, भ-2

औ-2, मिश्र-9, औ-6, भ-2

औ-2, मिश्र-10, औ-6, भ-2

औ-2, मिश्र-11, औ-6, भ-2

औ-2, मिश्र-12, औ-6, भ-2

क्षा-1, मिश्र-9, औ-6, भ-2

क्षा-1, मिश्र-10, औ-6, भ-2

क्षा-1, मिश्र-11, औ-6, भ-2

क्षा-1, मिश्र-12, औ-6, भ-2

गुणकार = 13

क्षेप = 4

www.JainKosh.org

पंचसंयोगी भंग

औप-2, क्षा-1, मिश्र-9, औ-6, भ-2

औप-2, क्षा-1, मिश्र-10, औ-6, भ-2

औप-2, क्षा-1, मिश्र-11, औ-6, भ-2

औप-2, क्षा-1, मिश्र-12, औ-6, भ-2

गुणकार भंग = 4

कुल गुणकार भंग 40 × गुण्य 12 = 480 + 39 = 519

उपशम श्रेणी में जहां औपशमिक के क्षायिक भाव के साथ संयोगी भंग बनाएंगे, वहां औपशमिक का सम्यक्त्व-चारित्ररूप स्थान ना लेकर मात्र चारित्र वाला स्थान लेना है । क्योंकि दो प्रकार के सम्यक्त्व एक साथ संभव नहीं हैं ।

www.JainKosh.org

उपशामक अनिवृत्तिकरण के भंग

भाग	गुणकार	गुण्य	क्षेप	कुल भंग
सवेद भाग	40	× 12	+ 39	519
वेदरहित भाग	40	× 4	+ 39	199
क्रोधरहित भाग	40	× 3	+ 39	159
मानरहित भाग	40	× 2	+ 39	119
मायारहित भाग	40	× 1	+ 39	79

वेदरहित भाग से औदयिक भाव के 5 भाव ही ग्रहण करना ।

सूक्ष्मसांपराय उपशामक के अनिवृत्तिकरण के अंत भाग की तरह 79 भंग हैं ।

उपशांतकषाय में भी उपशामक के अनिवृत्तिकरण के अंत भाग की तरह 79 भंग हैं । परंतु औदयिक के 5 भावों के स्थान पर 4 भाव ही हैं ।

दुसु दुसु देसे दोसु वि, चउरुत्तर दुसदमसीदिसहिदसदं ।
बावत्तरि छत्तीसा, बारमपुव्वे गुणिज्जपमा ॥835॥
बार चउतिदुगमेक्कं, थूले तो इगि हवे अजोगित्ति ।
पुण बार बार सुण्णं, चउसद छत्तीस देसोत्ति ॥836॥

- अर्थ-औदयिक भाव के गुण्यरूप प्रत्येक भंग मिथ्यादृष्टि आदिक दो गुणस्थानों में 204 हैं, मिश्रादि दो गुणस्थानों में 180 हैं, देशसंयत में 72 हैं, प्रमत्तादि दो गुणस्थानों में 36 हैं, अपूर्वकरण में 12 हैं, अनिवृत्तिकरण के पाँच भागों में क्रम से 12-4-3-2-1 हैं, इसके बाद अयोगीपर्यंत एक-एक हैं ।
- फिर मिथ्यादृष्टि आदि देशसंयतपर्यंत चक्षुदर्शनरहित या क्षायिक सम्यक्त्वी की अपेक्षा क्रम से 12, 12, शून्य, 104 और 36 गुण्यरूप भंग हैं ॥835-836॥

www.JainKosh.org

वामे दुसु दुसु दुसु तिसु, खीणे दोसुवि कमेण गुणगारा।
णव छब्बारस तीसं, वीसं वीसं चउक्कं च ॥837॥

- अर्थ-जिनसे गुणा किया जावे ऐसे गुणकार क्रम से मिथ्यादृष्टि में 9, सासादनादि दो में 6, असंयतादि दो में 12, प्रमत्तादि दो में 30, अपूर्वकरणादि तीन गुणस्थानों में 20, क्षीणकषाय में 20, सयोगकेवली-अयोगकेवली में 4 हैं ॥837॥

JainKosh.org

पुणरवि देसोत्ति गुणो, तिदुणभछच्छक्कयं पुणो खेवा । पुव्वपदे अड पंचय-मेगारमुगुतीसमुगुवीसं ॥838॥

- अर्थ-फिर भी उनमें चक्षुदर्शनरहित वा क्षायिक सम्यक्त्व की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि से लेकर देशसंयत तक गुणकार क्रम से 3, 2, शून्य, 6, 6 जानना ।
- क्षेप भंग पूर्वोक्त स्थानों में से मिथ्यादृष्टि में 8, सासादनादि दो गुणस्थानों में 5, असंयतादि दो में 11, प्रमत्तादि दो में 29, क्षपक अपूर्वकरणादि तीन में 19 हैं ॥838॥

उगुवीस तियं तत्तो, तिदुणभछच्छक्कयं च देसोत्ति ।
चउसुवसमगेसु गुणा, तालं रूऊणया खेवा ॥839॥

- अर्थ-इसके आगे क्षेप; क्षीणकषाय में 19, सयोगी और अयोगी में 3 हैं ।
- चक्षुदर्शनरहित वा क्षायिक सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि आदि देशसंयतपर्यंत क्रम से 3, 2, शून्य, 6, 6 क्षेप हैं ।
- उपशमश्रेणी के चार गुणस्थानों में गुणकार 40 तथा क्षेप उससे 1 कम अर्थात् 39 हैं ॥839॥

मिच्छादिठाणभंगा, अट्ठारसया हवंति तेसीदा ।
बारसया पणवण्णा, सहस्ससहिया हु पणसीदा ॥840॥
रूवहियडवीससया, सगणउदी दससया णवेणहिया ।
एक्कारसया दोण्हं, खवगेसु जहाकमं वोच्छं ॥841॥

- अर्थ-पूर्वोक्त गुण्यों को गुणाकारों से गुणने पर और क्षेपों को मिलाने से मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानों में स्थानों के भंग क्रम से मिथ्यादृष्टि में 1883, सासादन में 1255, मिश्र में 1085 होते हैं।
- असंयतगुणस्थान में 2801, देशसंयत में 1097, प्रमत्तादि दो गुणस्थानों में 1109 भंग होते हैं ।
- क्षपकश्रेणी वालों के यथाक्रम से अब कहता हूँ ॥840-841॥

www.jainkosh.org

पुव्वे पंचणियट्टी, सुहुमे खीणे दहाण छव्वीसा ।
तत्तियमेत्तो दसअड-छच्चदुचदुचदु य एगूणं ॥842॥
उवसामगेसु दुगुणं, रूवहियं होदि सत्त जोगिम्हि ।
सत्तेव अजोगिम्मि य, सिद्धे तिण्णेव भंगा हु ॥843॥

- अर्थ-अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण के पाँच भाग, सूक्ष्म-सांपराय, क्षीणकषाय – इन आठ क्षपकस्थानों में क्रम से 1 कम दशगुने छब्बीस अर्थात् 259, उतने ही अर्थात् 259, 99, 79, 59, 39, 39, 39 भंग होते हैं।
- उपशमश्रेणि के चार गुणस्थानों में पूर्वोक्त भंगो से दुगुने और 1 अधिक भंग जानने चाहिये ।
- सयोगी में 7, अयोगी में भी 7 और सिद्ध भगवान के 3 ही भंग होते हैं ॥842-843॥

www.JainKosh.org

मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानों में गुण्य, गुणकार आदि

गुणस्थान	गुण्य	× गुणकार	+ क्षेप	= कुल भंग
मिथ्यात्व	204	9	8	1844
मिथ्यात्व (चक्षुदर्शनरहित)	12	3	3	39
सासादन	204	6	5	1229
सासादन (चक्षुदर्शनरहित)	12	2	2	26
मिश्र	180	6	5	1085
असंयत	180	12	11	2171
असंयत (क्षायिक सम्यक्त्व)	104	6	6	630
देशसंयत	72	12	11	875
देशसंयत (क्षायिक सम्यक्त्व)	36	6	6	222
प्रमत्तसंयत	36	30	29	1109
अप्रमत्तसंयत	36	30	29	1109

क्षपक आदि स्थानों में गुण्य, गुणकार आदि

गुणस्थान	गुण्य	× गुणकार	+ क्षेप	= कुल भंग
अपूर्वकरण क्षपक	12	20	19	259
अनिवृत्तिकरण (सवेद)	12	20	19	259
अनिवृत्तिकरण (अवेद)	34	20	19	99
अनिवृत्तिकरण (क्रोधरहित)	3	20	19	79
अनिवृत्तिकरण (मानरहित)	2	20	19	59
अनिवृत्तिकरण (मायारहित)	1	20	19	39
सूक्ष्मसांपराय	1	20	19	39
क्षीणकषाय	1	20	19	39
सयोगकेवली	1	4	3	7
अयोगकेवली	1	4	3	7
सिद्ध	–	–	3	3

उपशम श्रेणी में गुण्य, गुणकार आदि

गुणस्थान	गुण्य	× गुणकार	+ क्षेप	= कुल भंग
अपूर्वकरण उपशामक	12	40	39	519
अनिवृत्तिकरण (सवेद)	12	40	39	519
अनिवृत्तिकरण (अवेद)	4	40	39	199
अनिवृत्तिकरण (क्रोधरहित)	3	40	39	159
अनिवृत्तिकरण (मानरहित)	2	40	39	119
अनिवृत्तिकरण (मायारहित)	1	40	39	79
सूक्ष्म-सांपराय	1	40	39	79
उपशांतमोह	1	40	39	79

www.JainKosh.org

- Reference : गोम्मटसार कर्मकांड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।